अन्तरिक्ष की दुनिया मे

रोमाचक वैज्ञानिक उपन्यास-माला 1

प्रिय सजीव एव विदुषी पुत्रियों को--

आज हम विज्ञान के युग म रह रहे हैं जहा प्रकृति के नित्य नए रहस्य खुल रहे हैं। मानव के लिए जो बातें अनहानी समझी जाती थी आज व सभी सम्भव हाती जा रही हैं।

विकसित एव विकासशील देश अपने वैज्ञानिका को अ तरिक्ष म भेजकर प्रकृति की खाज म लगा हुए हं। आज का वैज्ञानिक चाँद पर पहुच चुका है तथा अन्य नक्षत्रा की खाज म भी रॉकेट आदि छाडे जा चुक हैं। चाँद की धरती क भूखण्डा का नामकरण भी कुछ राष्ट्रा द्वारा किया जा चुका है। भविष्य म चाँद पर बस्तियाँ बनने की भी सम्भावनाए हैं। इस दिशा म रुस तथा अमेरिका म होड लगी हुई है। इन देशा ने अन्तरिक्ष में कुत्ते खरगाश बन्दर तथा कीटाणु और पौधे भजकर अन्य नक्षत्रा की खोज का मार्ग प्रशस्त किया है।

"अन्तरिक्ष की दुनिया म",अन्तरिक्ष से सम्बधित वैज्ञानिक उपन्यासा की एक एसी श्रखला है जिसम वैज्ञानिका की रामाचकारी गतिविधियो उनकी महत्त्वाकाक्षाआ उनकी खोजा का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

रोमाचक वैज्ञानिक उपन्यास माला --

अन्तरिक्ष की दुनिया में

1

एस सी दत्त

सहयोग प्रकाशन, दिल्ली-110091

प्रथम सस्करण 1991

मूल्य तीस रुपये

सहयोग प्रकाशन
41 सहयोग अपार्टमेंट
मयूर विहार फेज-I
दिल्ली-110091

कम्प्यूटर कोड्स दिल्ली-110009 द्वारा
ताज प्रेस मायापुरी नई दिल्ली
में मुद्रित

Antriksh Ki Dunian Main-(1)
Dhamaka
an adventurous science fiction in Hindi
by Shri S C Dutta

1 धमाका

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' यह उक्ति छोटी उम्र के युवक बलदेव के ऊपर पूरी तरह से घटित होती थी वह इकहरे शरीर का तथा गंभीर आखों वाला युवक वैज्ञानिक था जो अपनी प्रयोगशाला में एक महत्वपूर्ण खोज में लगा हुआ था

"तुम्हारी उडन प्रयोगशाला परीक्षण के लिए कब तक तैयार हो जाएगी!" विश्वनाथ ने पूछा

"शीघ्र ही तैयार होने जा रही है", पिताजी! बलदेव ने उत्तर दिया

वे दोनों बाप-बेटा प्रयोगशाला के बडे छप्पर के नीचे काम करके निकले ही थे कि एक जोर का धमाका हुआ भारी शोर मचाती हुई कोई चीज बिल्कुल उन्हें छूती हुई उनसे थोडी दूरी पर जा गिरी

"ओह बम गिरा है" बलदेव कूद पडा

"उल्कापात तो नहीं?" पिता ने हैरान होकर कहा

दूसरे ही क्षण उनकी विशाल श्वेत विज्ञानशाला की सभी दीवारें जोर से हिल उठीं यह एक भयानक भूचाल का धमाका था

वे दोनों बाप-बेटा अपनी शाला की ओर दौडे और गिरते-पडते उसके द्वार पर जा खडे हुए तब उन्होंने चाबी घुमाई और द्वार खुला

अन्दर एक अजीब भगदड मची हुई थी सभी कार्यकर्ता उस खड्ड की ओर दौडे जहां भारी चीज गिरी थी हवाई पट्टी के एक किनारे पर भीड जमा होने लगी

उडता हुआ पदार्थ इतने वेग से गिरा था कि जमीन में गहरा धंस गया था और उस पर धूल की भारी तह जम गई थी

"अरे । यह नया पहाड-सा टूट पडा है" वैज्ञानिक हृदयनाथ ने दांतों तले उगली दबाते हुए कहा

"इस विशाल टुकडे को देखने के लिए ऊपर से मिट्टी की खुदाई करनी पडेगी किसी को चोट तो नहीं आई ?" -- बलदेव ने पूछा

"मेरे विचार से तो बचाव हो गया है" -- इंजीनियर हृदयनाथ ने कहा

सौभाग्य से सभी लोग दूर थे, हां शाला की खिडकियों के शीशे तो टूट गए थे तथा अन्दर पडी हुई चीजें अस्त-व्यस्त हो गई थीं

बलदेव के पिता ने जो बेटे के पीछे-पीछे आया मिट्टी को खोदने का आदेश दे दिया, जलशक्ति से चलने वाले बेलचे से खुदाई तत्काल शुरू कर दी गई उस विशालकाय धातु का पता लगाने के लिए वह उत्सुक था ही

मिट्टी को हटाने में बहुत देर नहीं लगी तभी बलदेव दौडा हुआ गड्ढे में उतर गया

"यह कोई आकाशीय पिंड तो है नहीं"- उसने उस पिंड की अच्छी प्रकार जांच करके कहा -- "यह तो भारी कारीगरी का काम प्रतीत होता है जो कि हमारी धरती के विद्वानों का तो हो ही नहीं सकता"

हृदयनाथ तथा विश्वनाथ दोनों ने ही उसे देखकर आश्चर्य

व्यक्त किया उस पिंड पर लिखा हुआ लेख उनकी समझ में नहीं आ रहा था

"क्या इस पिंड को किसी अन्य ग्रह के प्राणियों ने तो नहीं फेंका ?" हृदयनाथ ने प्रश्न किया -- "और क्या सभव नहीं कि तुम्हारे श्वेत वैज्ञानिक परिवार के लिए इसे फेंका गया हो ?"

"भले ही किसी भी आशय से इसे फेंका गया हो, परन्तु मानना पडेगा कि यह अत्यन्त सूझ-बूझ का काम है" -- बलदेव बोला

"इसका लेख कुछ समझ आता है ?" हृदयनाथ का प्रश्न था

"ये तो गणित के गुप्त सकेत से प्रतीत होते हैं" -- विश्वनाथ ने उत्तर दिया

बाप-बेटे दोनों ने उन सकेतों को सुलझाने के लिए कुछ देर तक माथा मारा परन्तु यह समस्या सहज ही हल हो वाली नहीं थी

"इसमें तो समय लगेगा, मैं तो पहले अपनी उडन प्रयोगशाला का कुशलक्षम देखने के लिए उत्सुक हूँ" -- बलदेव ने कहा तथा उसी की ओर डग भरने लगा उसका पिता विश्वनाथ तथा इजीनियर हृदयनाथ भी उसके पीछे-पीछे हो लिया

बलदेव ने जाते ही चाबी लगाकर शाला का एक कक्ष खोला - उसके बाद वह भूमिगत छप्पर में भी उन दोनों को लेकर पहुँचा चादी की-सी वृहदाकार छटा शाला के पूरे छप्पर को घेरे हुए थी पहले तो उसे कोई गडबड नजर नहीं आई परन्तु उसने उस विशाल शाला का एक-एक कोना जाकर देखा तो उसे तसल्ली हो गई कि उस अन्तरिक्ष यान शाला को कोई हानि नहीं पहुंची

"उतनी देर में बलदेव का पिता विश्वनाथ दूसरे कक्ष में पहुँच चुका था जहां कि उसकी योजना संबधी सभी कागज सुरक्षित रहते

"अभी तक तो वे उलझन ही बने हुए है"

बलदेव अभी बातचीत में व्यस्त था कि टेलीफोन की घटी बजी, "हेलो । मैं बलदेव बोल रहा हू"

"राष्ट्रीय वीर पत्रिका' के कार्यालय के सम्पादक से पता लगा है कि आपकी हवाई पट्टी में कोई तारा टूटा है ? तुम्हारे द्वारपाल हमारे सवाददाता को जाने नहीं दे रहे"

"श्रीमान, एक बडे आकार का पिंड ऊपर से गिरा है उसकी छान-बीन जारी है उससे भवनों को थोडी बहुत क्षति हुई है, जानकारी मिलने पर आपको सूचित करेंगे"

"हम उस पिंड का चित्र भी तो लेना चाहेंगे"

"चित्र हम स्वयं ही आपको भेज देंगे", बलदेव का उत्तर था

"बेटा हरीश को नये यान की जाच के लिए लिख देना चाहिए"

"आज ही लिख देंगे, पिताजी"

हरीश श्रेष्ठतम पायलट था और श्वेत परिवार से चिरकाल से उसका घनिष्ट सम्बध था जिसे इस याजना का पता था और जिसने उडान से पहले मशीन को देखने का वचन दे रखा था

बलदेव मशीन के उपकरणों की जाच कर ही रहा था जब कि मशीन के छप्पर म से आवाज गूजी

"मै ठीक समय पर ही पहुच गया मालूम होता है, तो हम लोग इसी सुन्दर मशीन म विश्व का चक्कर काटने जा रहे है।"

चन्दन सीढियों से उतरता हुआ बोला वह एक प्रवीण रसोइया था जो श्वेत परिवार की हर यात्रा पर साथ ही जाया करता था उसने गाढे लाल रग की चैकदार कमीज पहन रखी थी

"स्वागत यात्रा कैसी रही"

"वढिया, कश्मीर तो सचमुच ही स्वर्ग है किसी ने कहा भी है ऐ फरदोस

कि धरती पर यदि कहीं स्वर्ग है तो यहीं है यहीं है, यहीं है"

"अच्छा तो यह गर्म जैकट कहा से मारी है ?"

"वहीं श्रीनगर से ही तो" -- चन्दन ने मुस्करा कर कहा

चन्दन अनुभवी और मंजा हुआ रसोइया ही नहीं था वल्कि विज्ञान के क्षेत्र मे भी वैज्ञानिकों के सम्पर्क मे रहने से काफी पैठ रखता था वह श्वेत परिवार के वैज्ञानिकों के साथ दक्षिणी ध्रुव मे भी हो आया था जहा कि वहा के श्वेत भालुओं तथा पैन्विन पक्षियों के साथ रहने का भी उसे अनुभव था

"अच्छा चन्दन, लो तुम्हें हम अपना आविष्कार दिखाते हैं" बलदेव ने कहा "इसका नाम है आकाश की रानी व उडन प्रयोगशाला यह तिमंजिला है"

"हैं भी रानी वाले ही ठाठ इसक - चन्दन मुस्कराया और अपने गजे सिर को झुकाकर उसे आश्चर्य से देखने लगा

"आगे चल आओ यह रहा इसका गोदाम इसके पिछवाडे मे खुली और चौडी छत है जिसपर दो छोटे-छोटे शिशु हेलीकॉप्टर लटके रहेगे वे हैं काम तथा गरुड" -- वलदेव ने परिचय देते हुए कहा

यह सुनकर चन्दन के नेत्र खुले के खुले रह गए

तब बलदेव ने यान का भीतरी भाग दिखाया जिसमें अनेक यत्र लगे हुए थे

"अरे इतने यन्त्रों को सभालने के लिए तो एक पूरा चालक दल चाहिए" चन्दन बोला

"नहीं ये सभी यन्त्र स्वय काम करेंगे, इसमे देखभाल के लिए पिताजी मैं, तुम तथा हमारे मित्र विद्याधर जी होंगे"

"इसमें प्रयोगशाला कहा है ?"

"भौतिकी तथा रसायन दोनों प्रयोगशालाएं है तीसरी पशुओं पर प्रयोग करन के लिए भी है"

"तो चिडियाघर को भी साथ ही उडा ले जाओगे ?" चन्दन खिलखिलाया बलदेव ने प्रयोगशालाएं दिखाईं

"कमाल है, पर पेट में चूहे नाच रहे हैं, मुझे रसोई दिखाओ" वहा सभी सामग्री पडी थी तथा छोटा सा पुस्तकालय भी था, साथ ही शयनकक्ष तथा रसोई का छोटा सा कमरा था

चन्दन अभी अपने कमरों का निरीक्षण करने जा ही रहा था कि जहाज के निचली मलिज से संदेश मिला 'बलदेव बेटा शीघ्र ही नीचे पहुँचो"

वह दौडा हुआ नीचे पहुँचा, विश्वनाथ के हाथ में एक टूटा हुआ यन्त्र था - "यह क्या पिताजी" ?

"हमारे रेडार में गडबड हो गई है, किसी घुसपैठिये द्वारा"

"क्षण भर में वह भी लुप्त हो गया" बलदेव ने आश्चर्य व्यक्त किया तथा भागा-भागा गोदाम की ओर गया, सभी पहरेदार इधर-उधर भाग रहे थे

तभी एक ठिगुना-सा काले बालों वाला युवक बडे बडलों म गायब हो गया

बलदेव ने उसका पीछा किया तभी उसे पीछे से शोर सुनाई पड़ा, मुड़ते ही उनकी चमकती आंखों से आखे टकराई तथा उसके सिर पर जोर की चोट पडी बलदेव गिर कर बेहोश हो गया

भगदड मच गई, विश्वनाथ ऊपर के छप्पर की सीढियों पर चढकर इधर-उधर नजर दौडाने लगा, तभी एक सिपाटी ने घबराये हुए कहा, "अभी तक तो कोई पकडा नहीं गया रेडार के एक यन्त्र में गडवड सी है"

"अच्छा, वलदेव कहां है" ? विश्वनाथ ने कहा

कहीं से कोई उत्तर न पाकर हडबडाया हुआ वह इधर-उधर पूछताछ करने लगा उसका मन डर रहा था कि उसका बेटा जरुर किसी परेशानी में पड गया है, तभी उसे किसी परिचित आवाज ने कहा "विश्वनाथ यह सब क्या हो रहा है ? सभी घबराये हुए क्यों दौड रहे हैं ?"

यह आवाज बलदेव के घनिष्ट मित्र विद्याधर की थी वह उसका सहयोगी पायलट था वह दूसरी ओर छोटे टेलीकॉप्टर की जाच में लगा हुआ था जिसे वडी प्रयोगशाला पर ठहराना था

विश्वनाथ ने सारी भगदड का कारण बताया और पास के छप्पर में तलाश करने लगा बडे-बडे बक्सों पर तिरपाल पडी थी वहा उसे ठोकर लगी विद्याधर ने तिरपाल हटाई

"अरे ! वलदेव तो बेहोश पडा है"

उसने सतरी द्वारा विश्वनाथ को तुरन्त बुलवा भेजा उसके आने तक बलदेव को होश में लाने के लिए विद्याधर पूरा प्रयत्न कर रहा था थोडी देर तक दोनों ने हर संभव उपाय किया उसे होश आया

"ठीक हो बेटा" ?

"जी हां वह दुष्ट मुझे धोखे से चोट मार गया वही जिसने हमारे कार्यालय में घुसपैठ की तथा जिसका मैं पीछा कर रहा था

ठिगुना-सा और दुबला-पतला तथा काले से रंग का" -- बेटे का उत्तर था

विश्वनाथ ने सन्तरी द्वारा कारखाने के सभी कर्मचारियों को सावधान रहने के लिए सूचना भेज दी

विद्याधर की एकदम चीख निकल गई, "अरे ! मैं तो अपने शिशुयान गरुड को हवाई पट्टी के आगे के जंगल में छोड आया हूँ भेदिया पायलट हो तो उसे उडा ही न ले जाय"

ध्यान आते ही वह भागता हुआ श्वेत कारखाने के सिरे पर क्षणों में पहुँच गया क्योंकि वह एक विख्यात खिलाडी था जंगल में उसके प्रवेश करते ही गरुड उडान भर ले गया

"चिडिया तो उड गई" वह विस्मित खडा रहा उसने उस पायलट को ध्यान से देखा

"कोई बात नहीं, जायेंगे कहा ?" इसे मैं अपन जेट से पीछा करके घेरता हूँ", - दात पीसते हुए वह बोला और विद्याधर के पास जा पहुँचा

"मैं भी चलूगा ?" बलदेव बोला

"अभी चोट से तो सभल लो !" बेटा

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ", बलदेव ने विश्वास दिलाया और विद्याधर के साथ हो लिया एक मैकेनिक की मदद से उन्होंने जेट को धकेला और दूसरे ही क्षण वे दोनों हवा मे उडने लगे

"उसे तो समीप ही होना चाहिए, इतनी देर मे वह जा ही कहा सकता है", विद्याधर ने सन्देह व्यक्त किया

दोनों ने जेट को इधर-उधर तेजी से घुमाया परन्तु गरुड मिला ही नहीं

"कहीं धरती में ही समा गया है

"ऐसे ही मालूम हाता है" -

स्वयं चलाकर काफी ऊंचाई पर ले गया । विद्याधर ने दूरबीन से सारा इलाका देख लिया परन्तु उन्हें केवल निराशा ही हाथ लगी और वे अपने हवाई अड्डे पर लौट आए

मित्र भूल हो गई" -- विद्याधर ने स्वीकार किया -- "मेरा गरूड तो एक खिलौना ही है जिससे बच्चा भी खेल सकता है"

"अजी यह खिलौना तुम्हें शीघ्र ही वापिस मिल जायेगा" -- बलदेव ने आशा व्यक्त की "और तब तक मैं पुलिस को भी सूचित किए देता हूँ"

सूचना देने के बाद वे दोनों विश्वनाथ के पास पहुँचे और उसे भी बताया वह भी सुनकर दुखी हुआ और बोला,

'गरुड तो सचमुच ही बहुत तेज गति वाला यान निकला"

'बिल्कुल परन्तु उस घुसपैठिए का यहा काम क्या था ? हॉ यहा अलमारियों में हमारे नक्शे तथा यन्त्र जरूर पड़े थे जो शायद उसके काम आ सकते हैं

बातचीत करते समय वह दराज टटोलने लगा,

"ओहो इसीलिए वह आया होगा" एक दराज को खाली पाकर विश्वनाथ गंभीर होकर बोला - 'इसमें से रेडियोधर्मिता को रोकने वाला यत्र गायब है"

"घबराइए नहीं पिताजी योजना के आधे कागज तो मैंने दूसरी जगह रखे हुए हैं" बलदेव ने चित्र ढूंढते हुए कहा, "ये रहे वे चित्र"

"परन्तु वह बद कमरों म घुसा कैसे ? कहीं कर्मचारियों का तो हाथ इसमें नहीं है ?" विद्याधर ने पूछा परन्तु पूरी खोज-बीन के बाद उन्होंने उन लोगों को निरापराध पाया

अभी वे निपटे ही थे कि किसी ने द्वार खटखटाया, बलदेव ने द्वार खोला - "अच्छा तुम हो, अरुण ?"

अरुण श्वेत कारखाने में एक प्रवीण मिस्तरी था उसके चेहरे पर उदासी तथा गम्भीरता थी वह काप भी रहा था

"क्या वात हो गई" ? विश्वनाथ ने पूछा

उसने रुंधा हुआ गला साफ किया और वाला -- "मै अपनी गलती स्वीकार करने आया हूँ यन्त्र की चोरी होने का जिम्मेदार मै ही हूँ"

■ शत्रु द्वारा धमकिया

"तुम्हारे मे एसा अपराध ' वर्षों से हमारे ही पास काम करने वाले त ा अत्यन्त विश्वसनीय होकर भी", विश्वनाथ ने आश्चर्य से पूछा

"इसम तो कोई सन्देह नहीं परन्तु मै विवश था"

"कैसे" ?

"पिछली रात को मैने भूमिगत हैंगर का द्वार बद ही किया था कि एक अजनवी आ धमका बलदेव को चोट मारने वाले की सी सूरत का था, न-जाने कैस घुसा अपने को हिंसक विज्ञान समाज का सदस्य बताता था वह सस्था पश्चिमी देशों की रक्षा के साधन जुटाने वाला सगठन है"

"यह तो एक भारी सगठन है मुझे मालूम है" -- विश्वनाथ वोला - "तो फिर क्या हुआ" ?

"आपके नए आविष्कार का रहस्य जानना चाहता था"

"हमारी नई योजना का पता उसे कैसे पडा ?"

"मैने साफ इन्कार कर दिया" अरुण कहता गया

"तब ! "

"उसने बन्दूक सीधी कर दी साथ ही कहने लगा -- कि मेरे पुत्र जीत को भी यूरोप में उन लोगों ने अपने सगठन के काम के लिए बधक बना रखा है -- वे लोग यूरेनियम की खोज में लगे है उसने धमकी दी कि जीत को पत्नी सहित तंग किया जाएगा यदि तुम्हारी योजना के नक्शे न दिए गए"

"तुमने बता दिया ?"

"और कोई चारा ही नहीं था मैं उसे नीचे ले गया उसने पेटिकाएं खोलकर पूरी छानबीन की और जो कुछ भी हाथ लगा वह लेकर चल पडा उसने अपनी बन्दूक बराबर मुझ पर ही ताने रखी जब वह लेकर निकलने लगा तो मैंने उसे पकड लिया, तब उसने मुझे चोट मारी मैं बेहोश होकर गिर पडा बाद की मुझे खबर नहीं आख खुली तो मैंने अपने घर म अपने को पडा हुआ पाया"

"घर कैसे पहुँचे" ?

"मेरी पत्नी ने ही मुझे बताया कि उसके साथ प्रात मैं घर आ गया था यद्यपि मुझे तो खबर नहीं - और अब मैं आपको घटना की खबर देने आया हूँ और हानि का पता लगाने भी मुझे इस घटना पर बहुत खेद है"

"यह भी शुक्र है जो तुम्हारी जान बच गई वह हमारी योजना के कुछ कागज तथा छोटा हेलीकाप्टर उडा ले गया"

"तब तो योजना के शेष कागज भी वह लेने आएगा" -- अरुण ने कहा

"अब कहां हिम्मत करेगा वह" विद्याधर ने जोश में कहा

"वास्तव म मैंने अपने पुत्र जीत को तुम्हारे अनोखे आविष्कार क बारे म पत्र डाला था मालूम होता है कि वह पत्र शत्रु के हाथ लग गया है उसी का परिणाम चोरी हो सकता है" - अरुण ने बात को स्पष्ट करते हुए कहा

"कह नही सकता खैर ! तुम अपने पुत्र को शत्रु की गतिविधियों से सावधान रहने के लिए लिख दो ताकि इसका दुष्प्रभाव तुम्हारे परिवार पर तो न पडे" -- विश्वनाथ ने उसे सावधान करते हुए कहा

अरुण धन्यवाद देकर विश्वनाथ की सलाह के अनुसार पग उठाने के लिए लौट गया इन लोगों ने सावधानी के लिए कडे कदम उठाने का निर्णय लिया

"फिल्म लेने वाला टेलीविजन कैमरा क्यों न लगा लें ?" बलदेव का सुझाव था

"बिल्कुल !' विश्वनाथ ने सहमति प्रकट की तथा कारीगरों को एसे यन्त्र लगाने तथा रेडार की मरम्मत करने का आदश दे दिया

"मै स्वय भी तो कसर नही छोडूँगा' - बलदेव ने हाथ मलते हुए कहा

"घुसपैठिया स्वय भी एक अच्छा पायलट होगा जो अपना हेलीकॉप्टर वहीं जगल में दूसरे पायलट क हवाले कर आया और स्वयं हमारे कागजों पर छापा मारने के लिए यहा पहुचा" - विद्याधर ने अपना विचार रखा

"यह भी सम्भव है", बलदव ने कहा - "वह भेदिया यहा छिपा होगा ताकि उसका साथी बाद में उसे यहा से उडा ले जाए"

"आश्चर्य का विषय है कि हमारा रेडार शत्रु के आने-की सूचना देने म असफल कैसे रहा"

"उसके पास रेडार को भी असफल करने वाला कोई-न-कोई यन्त्र जरूर होगा" -- बलदेव ने विश्वास के साथ कहा

"खैर ! जो भी हो हमारा रेडार यन्त्र हमारा आशाओं के अनुकूल नहीं" विश्वनाथ ने टिप्पणी की

उसमें खराबी क्या है" ? विद्याधर ने पूछा

"ज्यादा दूरी से यानों का पता नहा लगा पाता"

"आपका तात्पर्य मगल ग्रह से यानों का पता लगाना है ?"

हा यह भी तथा साथ ही वायु मण्डल के अज्ञात तत्वों का भी हम पता लगाना चाहते हैं -- विश्वनाथ ने बताया 'अभी इसके सकेत इतने सतोषजनक नहीं हैं

मैं अधिक वजनदार गैस योजन के लिए प्रयोगशाला में प्रयोग करके उसे ढूढूगा जो इस कमी को पूरा कर सके" - विश्वनाथ ने कहा

तभी बलदेव की बहन शान्ति का कारखाने के बडे द्वार से फोन मिला विद्याधर तथा बलदेव दोनों भागते हुए वहा पहुँचे वह घबराई हुई बोली मैं घोडे पर सवार होकर थोडी दूर ही पहुची थी कि एक हेलीकॉप्टर से पायलट ने उतरकर मुझे धमकी दी तभी एक ट्रक को जबरदस्ती रोककर उसमें बैठकर चला गया उसकी सूरत बडी भयानक थी

वह हमारा हेलीकॉप्टर ही तो चुराकर ले गया है और साथ ही हमारे नक्शे भी घबराओ मत वह भागेगा कहा, अच्छा विद्याधर ! अब हमें अविलम्ब चल पडना चाहिए" विश्वनाथ ने निर्देश दिया

4 हेमक सगठन से आगन्तुक

बलदेव तथा विद्याधर दोनों ने कार में दौड लगाई और तब वन में हेलीकॉप्टर के स्थान पर पहुँच गए वह एक नाले के किनारे बेंत के पेडों में छिपा खडा था

ऊपर से भला दिखाई भी कैसे दे सकता था जबकि पेड़ों की टहनियों से पूरी तरह ढका हुआ है ये तो प्राकृतिक पर्दे हैं" विद्याधर ने कहा

बलदेव ने बीच में बैठकर जाच करते हुए कहा - "इसकी ब्रेकें तो ठीक हैं चोर ने इस सही सलामत ही छोड़ा है मैं तो इसमें उड़ान भरूगा तुम्हें कारखाने मे ही मिलूँगा"

विद्याधर कार से जा रहा था जब कि बलदेव हेलीकॉप्टर गरुड़ में ऊपर कलाबाजिया दिखाता हुआ उड रहा था ताकि उसे तसल्ली हो कि शत्रु ने कहीं गडबड नहीं की उसने उतरते ही अपनी बहन शान्ति को अपनी प्रतीक्षा करते हुए पाया

"मुझे खुशी है कि तुम्हारा यान तुम्हे मिल गया' -- वह बोली

"प्रसन्नता का विषय तो है ही परन्तु भविष्य में देहाती सड़कों पर घुड़सवारी करना ठीक नहीं

"बिल्कुल, जब तक कि बन्दूकची कैद नहीं होता"

"मैं पुलिस को हेलीकॉप्टर मिल जाने की सूचना तो दे दूं" बलदेव ने कहा और पुलिस स्टेशन चला गया

उसे पुलिस कैप्टन ने बताया कि ट्रक चालक से सारी घटना का ब्यौरा मिल चुका है और चोर की खोज जारी है

बलदेव अपनी उडन प्रयोगशाला में जोर-शोर से काम में जुट गया, ताकि उसकी शाला में कहीं भी कमी न रह जाए साथ ही जो हवाई पिण्ड उनके क्षेत्र में गिरा था उसके संकेत समझने में भी वह हर दम लगा ही रहता था दोनों बाप-बेटा उसी रहस्य को सुलझाने की धुन में लगे रहते थे

संकेतों की समस्या न कुछ सुलझी और न कुछ ने बेटे से प्रश्न किया

उस दिन बलदेव उन्हीं को पढने में व्यस्थ था छोटे व वडे वृत अलग-अलग अर्थ रखते थे उसका अनुमान था कि वडा घेरा ता धरती को प्रकट करता है और छोटा मगल ग्रह को वह सन्देश तो मगल ग्रह के निवासियों का हो सकता था

"पिता जी मैं तो अभा तक इस परिणाम पर पहुँचा हू कि एक-दूसर को काटने वाले दायरे धरती तथा मगल-ग्रह के द्योतक हैं उन ग्रहों के निवासी हम लोगों से सम्पर्क स्थापित करने के इच्छुक मालूम पडते हैं' बलदेव ने अपनी खोज का ब्यौरा देते हुए कहा

विश्वनाथ मुस्कराया -- "मेरी जाच का परिणाम भी यही कुछ बता रहा है"

"मुझे और समय मिलने दीजिए दूर व्योम में उडने से पहले मैं इस रहस्य को पा लूगा बलदेव ने विश्वास पूर्वक कहा,

एक प्रात वह अपने गोदाम की चीजों की जांच करके हटा ही था कि उसने अपने आकाश की रानी" जहाज की रसोई में जाने का निर्णय किया तभी उसने कर्मचारियों को खाने क लिए जाते देखकर खुद भी भूख महसूस की रास्ते में उसकी दृष्टि कुछ नगी तारों पर पडी

"विजली की तार कहीं डडी को छूकर आग न लगा दें" बलदेव को सन्देह हुआ

उसने टार्च द्वारा ध्यान से देखा उसने कर्मचारियों को सूचित करने से पूर्व स्वय खाके की जाच की "तारों को बदलना पडेगा", उसने सोचा और कार्यालय से निकलते ही एकदम रुका ऊपर देखते ही धुए का बादल-सा उसे नजर आया, उडन शाला के रोशनदान से धुंआ उठ रहा था उस अनर्थ का आभास हुआ

"यह वह तार तो हो नही सक्ती यह धुँआ तो तीसरी मजिल

से आ रहा है" उसने देखा

आग बुझाने वाला यन्त्र लिए हुए वह जहाज की अन्दर वाली सीढियों में से कूदा और चन्दन से लगभग टकरा गया

"चन्दन ! आग कहा लग रही है" ?

चन्दन भी रसोई से सीढियों की ओर जा रहा था धुए से उसकी आखो में आसू आ रहे थे गला भी रुधा हुआ था

"मुझे जरा सास लेने दो

"क्या रसोई म आग लग रही है" ?

"यह तो मेरे आविष्कार म विस्फोट हुआ है", चन्दन ने कहा

"तुम्हारा आविष्कार" बलदेव ने आश्चर्य से पूछा

उसने अपने हाथ में पकडा हुआ एक गेंद-सा दिखाते हुए कहा -- "यह पालक का बचा हुआ हिस्सा केतली में जल रहा था पानी सूख जाने मे सब्जी जल रही थी"

"पालक की गोलियो स उडन-यन्त्र में तोड-फोड" जोर से बलदेव चिल्ला रहा था

चन्दन ने उसे गुस्से से देखा क्योंकि उसकी सास अभी धुए स रुक रही थी

"मैं तो तुम्हें बढिया व्यजन खिलाने जा रहा था, परन्तु गडबड हो गई अभी और कुछ तैयार कीजिए"

बिजली वाले के लौटन पर बलदेव ने उसे तार म गडबड की बात बताई - तभी विश्वनाथ ने सूचना दी - "अरुण को अभी-अभी अपने पुत्र जीत की पत्नी का तार मिला है जीत वैज्ञानिकों के दल के साथ साहसिक यात्रा मे गया है, आशा है कि सब ठीक ही होगा"

तभी साथ के कार्यालय से फोन मिला

"आप दोनों बाप तथा बेटे को मिलने के लिए कोई सज्जन

आए हैं" - कुमारी तरुण ने सूचना दी - "वह वैज्ञानिक सगठन की ओर से आए हैं"

बाप-बेटा एक-दूसरे को देखते रह गए

"कहीं वही दुष्ट तो नहीं है जिसने बलदेव को लताड़ा था, उसकी दोबारा शरारत करने की नीयत हो सकती थी"

"उन्हें अन्दर ले आइए" - विश्वनाथ ने अपनी सचिव तरुण को कहा उतनी देर में उसने बटन दबाया और उसके काम वाला मेज़ कागजों के साथ वहां से हट गई

हमें उसपर विशेष निगाह रखनी पड़ेगा - हमारे शत्रु ने अपना साथी ही न भेज दिया हो उसे बीच में बिठाइएगा" -- बलदेव बोला

'बात तो ठीक है"

राजेश आ रहे है" - तरुण ने द्वार खोलते हुए कहा

बलदेव ने तुरन्त भाप लिया कि वह तो कोई दूसरा कुछ बडी उम्र का व्यक्ति है

इनका परिचय देने पर वह बोला- "महाशय मैं भी अपना परिचय पत्र पेश करू ? मैं हेमक वैज्ञानिक सगठन का नया प्रधान हू"

उसने अपना कार्ड तथा अन्य पत्र इन दोनों को दिखाए जिन्हें ध्यान से पढने पर उनका सन्देह जाता रहा

"हम लोगों ने रतन परिवार के उद्योग की बहुत चर्चा सुनी है" - उसने कहा - "हेमक सगठन के वैज्ञानिक आप दोनों वैज्ञानिकों से मिलकर काम करने के लिए बहुत इच्छुक हैं"

"जिस हेमक वैज्ञानिक समाज की हमने चर्चा सुन रखी है यदि वहां लोग हैं तो उनसे सहयोग करने में हमारा सौभाग्य होगा" -- विश्वनाथ का उत्तर था

उन दोनों बाप-बेटों को पूरी तसल्ली हो गई जब कि ऐसे सरल स्वभाव के व्यक्ति से उनकी बातचीत हुई

"हमें इस क्षेत्र में बहुत कुछ करना है, यदि दोनों ओर से मेल-जोल बना रहा तो यूरोप तथा भारत दोनो ही बहुत लाभ उठाएंगे" -- राजेश ने आशा व्यक्त की

घनिष्टता हो जाने पर तीनों में सौहार्दपूर्ण वातावरण में बातचीत होने लगी

"मैं भी यूरोप का दौरा किसी दिन जरूर करूंगा" -- अपने मन में अपनी बड़ी प्रयोगशाला का स्वप्न लेते हुए बलदेव ने कहा

"किसी दिन नहीं बल्कि शीघ्र ही तुम्हारा चक्कर लगेगा"-- राजेश का विस्मयकारी उत्तर था - "तुम्हारी इतनी छोटी-सी अवस्था में ही विज्ञान के क्षेत्र में विश्व भर में ख्याति फैल रही है मेरा यहां आना भी तो इसी आशय से हुआ है"

बलदेव अधिक आशावान् हो गया

"मैं आप लोगों को कुछ अन्य तथ्यों से भी अवगत करा दूं कि हमारे ही बीच में से एक वर्ग ने बागी होकर एक पृथक राज्य स्थापित करके हमारे विरुद्ध ही छापा मार युद्ध शुरू कर रखा है"

वास्तव में वरुण राज्य ही उनके मार्ग में रोड़ा अटकाए हुए था

"हमारी सरकार यूरेनियम की खोज के लिए उत्सुक है एक प्रसिद्ध खोजी ने बताया है कि वरुण राज्य की सीमा पर यूरेनियम के भंडार हैं हम ये भंडार इन विद्रोहियों के हाथ नहीं लगने देना चाहते"

"उन विद्रोहियों को क्या इस रेडियोधर्मी द्रव्य का उपयोग करना आता है ? बलदेव ने प्रश्न किया

"इन भंडारों को वे लोग किसी अन्य देश को बेच सकते हैं जो वर्ग अपने देश के विरुद्ध अलग राज्य बनाकर विद्रोह कर रहा

है वह निश्चय ही शक्तिशाली वर्ग होगा ?"

"शक्तिशाली ! राजेश गंभीर हो गया वे तो अत्यन्त दुष्ट तथा निर्दय हैं हमारे इस विद्रोही संघ ने एक खोजी दल सामा पर भेजा है परन्तु हमें विद्रोहियों द्वारा गडबड किए जाने का डर है दो सप्ताह से उनका कोई पता नहीं है"

"पिताजी तब तो जीत भी उसी दल में होगा ?"

"जीत तो हमारे दल का प्रसिद्ध वैज्ञानिक है ? उसे आप कैसे जानते हैं ?" राजेश ने पूछा

"वे लोग तो सज्जन और प्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं हमें भय है कि जीत को यूरेनियम की खोज के लिए वे लोग परेशान न कर रहे हों" - राजेश ने कहा

"क्या विद्रोही दल के आगे तुम्हारे वैज्ञानिक झुक जायेंगे ?" बलदेव ने पूछा

"वे कब तक डटे रह सकते हैं ? इसीलिए तो मैं आपसे भी पूछना चाहता हूँ कि क्या आप दोनों उन्हें रोकने में हमारी मदद कर सकते हैं ?" राजेश बोला

5 विज्ञान सम्मेलन

राजेश के प्रश्न के उत्तर के लिए बलदेव अपने पिता के मुँह की ओर बडी उत्सुकता से देखने लगा क्योंकि सहायता करने वाली बात तो बडे साहस की थी

"हमें तो श्वेत परिवार के आविष्कारों से बहुत मदद मिलेगी" राजेश ने जोर दिया आप दोनों की सहायता से एक ओर तो हम वैज्ञानिकों को मुक्त करवा सकेंगे तथा दूसरे यूरेनियम की खोज

करना सरल हो जायेगा

विश्वनाथ ने प्रश्न किया "आप लोगों ने भी तो इस दिशा में काफी प्रयत्न किया होगा ?"

"खूब ! परन्तु हमें सफलता नहीं मिली" – राजेश ने कहा

बलदेव इस काम के लिए बहुत चिंतित था उसे तो गीता को उन विद्रोहियों के चंगुल से छुड़वाना था

"हमें तो यह देखना है कि हम कितनी अच्छी चढ़ाई कर सकते हैं, क्योंकि अभी कुछ दिन तो हमें यहीं रहना पड़ेगा" – विश्वनाथ ने कहा

"ठीक है आपके प्रस्थान करने तक वे वैज्ञानिक डरे होंगे और शत्रु को खान की खोज करने में सफल नहीं होने देंगे" राजेश ने विश्वास दिलाया

"मैं आपके वैज्ञानिक दल की मदद का वचन देता हू, सफलता तो प्रभु के हाथ में है आपने बहुत बड़ा काम हमें सौंपा"

"आपके लिए कुछ बड़ा नहीं"

"हा जबकि हमारा नया आविष्कार उड़न प्रयोगशाला हमारे साथ होगी" -- बलदेव झट से बोला

"जाने से पूर्व मैं आपके नए यान के दर्शन तो कर लू" -- राजेश ने इच्छा व्यक्त की

यान तो बलदेव के विचार से अधूरा ही था तो भी वह इजीनियर राजेश को दिखाने के लिए उद्यत हो गया

राजेश उड़न प्रयोगशाला को देखकर दंग रह गया और बोला -- "क्या अद्भुत चीज बनाई है आपने ! अब मैं आज्ञा चाहूगा क्योंकि पहले ही मैंने आपका काफी समय ले लिया है"

एक अनुनय है आपसे" जाते हुए वह बोला "भविष्य में हमें शत्रु की चालों से सावधान रहना है और परस्पर पत्र व्यवहार

करते समय हमारे खण्ड का गुप्त नाम भव्य रहेगा जिससे शत्रु को पता न लग पाए

"ऐसे ही होगा" -- विश्वनाथ ने विदाई देते हुए विश्वास दिलाया

बलदेव पिता की ओर मुड़ा 'हमें काम में तेजी लानी चाहिए" -- वह बोला और दोनों अपनी विशाल प्रयोगशाला के अलग-अलग विभागों में काम के लिए चल गए

निचले छप्पर में पहुचते ही बलदेव का चन्दन टकरा गया

"वाह ! क्या बांके छबीले लगते हो इस भड़कीली पोशाक में" चन्दन रसोईए को बलदेव ने कहा

"तुम्हें जच रही है ?"

"इसे देखते ही भीड इकट्ठी हो जाएगी"

"तुम्हें तो रंगों की अच्छी परख है" -- बलदेव की ठोडी को छूते हुए रसोइया बोला -- और ये रंगीन पैंसिल तुम्हारी जेब में कैसे पडी हैं ?"

"यह तो और ही कुछ है - पैंसिलों को जेब से निकालते हुए बोला -- हरी तो लघु रेडियो है सकेतों के आदान-प्रदान के लिए

"खूब" उस रंगीन वस्तु को हाथ में उल्टाकर बटन दबाते हुए बोला "अच्छा इसकी कला यह है !

"लाल पैंसिल जल्दी में धातु को काटने के यन्त्र और नीले रंग की शत्रु के यन्त्र की पूर्वसूचना देने वाली पैंसिल है" -- बलदेव ने तीनों पैंसिलों की जानकारी देते हुए कहा

"तुम्हारा दिमाग तो प्रत्यक्ष अद्भुतालय है"

अगले दो दिन बाप-बेटा दोनों ही वैज्ञानिकों के सम्मेलन के लिए तैयारी करने में बुरी तरह व्यस्त रहे उनके सम्मेलन की

पूर्वसंध्या में वे उस नगर में पहुंच गए एक बडे भवन की चौथी मंजिल पर प्रोग्राम था

"आपके पुन दर्शन करके बडी खुशी हुई" दर्शक कक्ष के द्वार पर दानों वैज्ञानिकों का स्वागत करते हुए इंजीनियर राजेश बोला

वहा उपस्थित वैज्ञानिको से परिचय कराए जाने पर बलदेव को बचपन से ही जान-पहचाने चेहरों की याद हो आई जो कि विज्ञान के किसी न किसी क्षेत्र में विशेषज्ञ थे

कुछ क्षणों के उपरान्त राजेश ने विज्ञान सम्मेलन का उद्घाटन किया जनता के चेहरों पर उत्सुकता नजर आ रही थी जबकि उन्होंने आज तक के सबसे छोटे वैज्ञानिक बलदेव को मंच पर भाषण देते हुए देखा

सभी वैज्ञानिक विस्मित रह गए जब उन्होंने बलदेव के मुख से यूरेनियम की खोज में अपने नए यान की उडान का सुना और उसकी ओर बडी आशा भरी दृष्टि से देखा तालियों से हाल गूंज उठा जब उसने बताया कि यूरेनियम का ऊपर काफी ऊंचाई से पता दे देन वाला यन्त्र वह तैयार कर रहा है

'आदि वस्तियों की पुरानी कथा के अनुसार" बलदेव ने भाषण को जारी रखते हुए कहा - उन लोगों ने एक नर्क घाटी का पता लगाया था जहा असाधारण वग क बहुत बडे-बडे पेड़ थे वहा कोई भी जीव-जन्तु नही जाता था'

"वहा गुफा से एक नदी बहती थी वह गुफा रात को चमकती थी उन लोगों का कहना था कि उस नदी के जल को पीते ही मनुष्य राजा हो जाता था"

श्रोताओं के सिर हिलाने से इस बात की पुष्टि होती था कि उनको भी यह कथा मालूम थी

"बलदेव ने वर्णन जारी रखा -- "मेरे विचार में वह जल एसे खनिजों में से बहता है जिनमें रेडियोधर्मी तत्व हैं और अनुमान है कि वे तत्व अठारह सौ फुट गहराई में मिलते हैं इस मूल्यवान तत्व को ढूढने के लिए विशेष अनुसंधान यन्त्र (सुपर गीगर) की जरूरत है, हम लोग इसी की खोज में लगे हैं"

उसने जरूरी बात बताकर उन वैज्ञानिकों की भव्य योजना की सफलता के लिए शुभ कामना प्रकट की भाषण समाप्त होते ही जनता की तालियों की गड़गड़ाहट से हाल गूंज उठा

दूसरे वक्ता विश्वनाथ के उठते ही श्रोताओं ने उसका भी तालियों द्वारा स्वागत किया उसने उन्हें मन्त्र-मुग्ध कर दिया जब उसने बताया कि उसकी हवाई पट्टी पर आकाश से एक अद्भुत पिंड गिरा था

"उसे हम उल्कापात कह दें परन्तु उसके निर्माण में एक विशेष कौशल प्रतीत होता है उसकी छानबीन हमने चित्र लेने वाले विशेष यन्त्र से की है ऐसा पिंड हमारी इस धरती पर तो मिलेगा नहीं उस पिंड पर अनोखा खोल है जो किसी धातु का बना नहीं मालूम होता ऊपर का अणु से बना हुआ यह आवरण अभी तक हमारी समझ में नहीं आया"

अभी विश्वनाथ बोल ही रहा था कि बलदेव ने एक व्यक्ति को सबसे पिछली पंक्ति से धीरे से उठते हुए देखा उसे देखते ही वह अवाक रह गया वह तो वही व्यक्ति था जिसने उसे छप्पर के नीचे चोट पहुचाई थी बलदेव ने उसका पीछा किया परन्तु पक्षी उसके हाथ से निकल गया हताश होकर वह वापिस लौटा जबकि उसका पिता अपने भाषण को समाप्त करने जा रहा था

अपनी जगह पर बैठते ही सोच में पड़ गया कि वह व्यक्ति कौन सा भेद लेने आया होगा

विज्ञान सम्मेलन की समाप्ति पर विश्वनाथ अपने वेटे के सा[illegible]
पहुचा

"तुम उस व्यक्ति के पीछे भागे थे क्यो ?" पिता

"जी हा पिता जी वह तो वही दुष्ट था जिसने मुझे चोट पहु[illegible] कर गीगर यन्त्र का हिस्सा चुराया था अब वह यहा भी जासूसी कर रहा था" -- वलदेव ने उत्तर दिया

विज्ञान सम्मेलन के अध्यक्ष राजेश ने कहा -- "जासूस हाल में पहुचा कैसे" ?

"उसके पास जाली सदस्यता का कार्ड होगा" -- वलदेव ने कहा - "इसकी पुलिस को सूचना दी जानी चाहिए

"यह तो गम्भीर बात है" -- राजेश ने टिप्पणी की

"बिल्कुल ' वेटा तुम सूचना दे दो तो फिर हम घर चलें' विश्वनाथ बोला

वलदेव ने पुलिस को फोन किया और तव उन दोनों ने हेमक वैज्ञानिक समाज के अध्यक्ष राजेश से विदा ली

'मुझे तो यह वात बहुत अखरती है" -- विश्वनाथ ने कहा "वरुण देश के विद्रोहियों का इरादा मुझे कुछ और ही लगता है

"आपके विचार में शत्रु कोई वडी चाल चलना चाहता है' ?

'वे लोग यूरेनियम धातु को पाने के लिए हर चाल चलेंगे

"तव तो हमें इस दिशा में अपनी गतिविधियों को और तेज करना होगा पिता जी

दूसरी प्रात नाश्ते के समय विश्वनाथ गीगर यन्त्र के चुराए गए कागजों की खोज में अधिक तत्पर रहने के लिए चिन्तित प्रतीत हो रहा था

"तुम भी मेरे साथ चलना चाहोगे वेटा" ?

"जी हां मैं भी अपने यान को तैयार रखूंगा साथ चलने के लिए"

बलदेव की बहन शान्ति जो स्वय भी एक प्रवीण पायलट थी बोल उठी "मैं भी तुम्हारे साथ किसी दिन उडान भरूंगी"

बहुत बढिया अभी चलो और लघु यान को उड़ा ले चलो और जरा अपना कौशल दिखाओ"

वे शीघ्र ही जहाजों के कारखाने में पहुचे विश्वनाथ के मित्र नूतन ने जो उस कारखाने का मुखिया था एक लघु जहाज को शेड से बाहर निकाला शान्ति ने उस यान की मेहराब बजाते हुए उडान भरा

"बहुत अच्छे भाई ने सराहना करते हुए कहा -- "परन्तु यान को ऊंचाई पर ले जाकर तब कला बाजिया दिखाओ धरती के बहुत समीप नही

शान्ति ने यान को गति दी और वह और ऊपर उठ गया और थोडी देर में वह कला बाजिया खाने लगा

"मान गए तुम्हे" शान्ति के साथ बैठे हुए भाई ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा और स्वय भी उसने बडी तत्परता का परिचय दिया तथा यान को धरती से लगभग छूते हुए थोडी-सी खाली जगह में से उडाता हुआ ले गया तभी उनकी मशीन के निचले हिस्से में एक धमाका हुआ

यान डगमगाया

"अरे कोई हम पर गोले बरसा रहा है" बलदेव चिल्ला उठा

"शायद टक्कर मारनी पड, शान्ति, अभी डटी रहो'

वलदेव एक मजा हुआ पायलट हाने के कारण यान को बचाकर उतार ले गया नहीं तो अभी उसके टुकडे-टुकडे हो जाते फिर भी पोत का निचला हिस्सा थाडा सा अलग हो गया

'ठीक हो शान्ति' ? बलदेव बाला

"लगभग, कम स कम कोइ अग तो नहीं टूटा तुम सुनाओ"

"मै भी ठीक हू" भाइ बोला

शान्ति न सुरक्षा पटी खाला और यान स बाहर आ गई तथा उसके नुकसान का अनुमान लगान लगी

'प्रभु की कृपा से प्राण बच गए" -- बलदेव ने कहा

"परन्तु क्या यह उसी व्यक्ति की शरारत है जिसने तुम्हे चोट पहुचाई थी ?" शान्ति ने पूछा

"उन्ही लोगो की शरारत हो सकती है जो हमारे यूरेनियम खोजने क प्रयास को असफल बनाने के इच्छुक है

तभी विद्याधर को लिए तीन चालकदल के सदस्यों का ट्रक बलदेव को लिवा लेने के लिए हवाई पट्टी पर पहुच गया

"दोनों ठीक-ठाक हो न" ? विद्याधर ने पूछा

"धरती से दूर मार तोप से शत्रु ने गोला फेंका था" -- बलदेव का उत्तर था

विद्याधर ने उस गोले को खूब देख-भाल कर कहा - "यदि यह गोला कहीं फट गया होता तो"?

"तो इसे फेंकने वाला स्वय भी उडकर न-जाने कहा पहुंच गया होता" बलदेव बोला -- "मै खोज-बीन करने जा रहा हू"

विद्याधर तथा उसके साथी भी साथ ही हो लिए भाई की

अनुनय पर शान्ति ने घर लौट जाने की बात मान ली

बलदेव की शत्रु को ढूढने की आशा धुधली पड गई क्योंकि उसने जगल की झाडियों तक को छान मारा

अरे ! जरा रुकिए विद्याधर चिल्लाया -- "यदि उस सूची से अनुमान लगाया जाए तो वरुण देश के भेदिए का ही यह काम हो सकता है'

"तुम्हारे ऊपर दो बार वार किया गया है यह साधारण बात नहीं है" -- विद्याधर ने टिप्पणी की

"है तो बात ऐसा ही पर शत्रु तो शान्ति का उडा देना चाहता था"

"कुछ भी हो जो कुछ भी तुम करने जा रहे हो मुझे उसमें शामिल समझना अच्छा तुम्हार विचार से शत्रु को पता कैसे लगा कि तुम अपने वायुपोत का सुबह परीक्षण करने जा रहे हो" ?

यही तो अचम्भा है उनके द्वारा जासूसी जाल बिछा रखा प्रतीत होता है ' -- बलदेव ने गम्भीर होकर कहा

"फूक-फूक कर कदम रखो -- विद्याधर ने सावधान किया

खेत उद्योगशाला की ओर जाते हुए सब लोगों की चर्चा का विषय आक्रमण ही था बलदेव ने जब अपने पिता को यह घटना बताई तो वह गभीर हो गया

"तुम्हें बहुत सावधान रहना होगा, बलदेव" विश्वनाथ ने कहा "जब तक कि हम इस घटना की तह तक नहीं पहुच लेते पुलिस को तो अवश्य सूचित कर दो"

"अवश्य साथ यह भी सलाह दूगा कि वरुण देश को जाने वाले सभी हवाई जहाजों की जाच की जाए" -- पुत्र ने आश्वासन देते हुए कहा

बेटे की अनुपस्थिति में बाप सुपर गीगर (रेडियोधर्मी द्रव्य की

खोज करने वाली मशीन) के प्रयोग में लगा हुआ था उसने दू
गैसों के सम्मिश्रण पर संतोष व्यक्त किया

"कल ही इस मशीन को ले जाकर यूरेनियम की खोज
इसका प्रयोग करेंगे" -- विश्वनाथ ने कहा

दूसरी प्रात बलदेव उडन प्रयोगशाला की जांच से विज्ञ
विज्ञानशाला से काफी दूर ऐसे स्थान पर पहुचा जहां उसका मि
धरती में नदी खुदवा रहा था

"प्रयोग के लिए हम यूरेनियम को दबाने जा रहे हैं" -
विश्वनाथ ने कहा - "वीस फुट तक गड्ढा तो खोद चुके हैं
सिलिन्डर भरा रखा है"

"वह सिलिन्डर वाली गाडी के पास पहुचा और बोला --
"इस गर्म सिलिन्डर को क्रेन के द्वारा गड्ढे में उतार दो इससे
दूर-दूर ही रहना होगा जब तक कि गड्ढे को मिट्टी से भर न
दिया जाए"

गड्ढे की पूर्ति के वाद वह वेटे से बोला - "हम तैयार हैं

बलदेव ने कहा -- "मैं भारवाहक हवाई जहाज को लाता
हूं" और वह छप्पर की ओर चला गया उस पर यूरेनियम ढूंढन
वाला यन्त्र (काउंटर) पहले से ही सुरक्षित लटका रखा
था

"मशीन उडान भरने के लिए तैयार है" मैकेनिक बोला

वलदेव हवाई पट्टी पर पहुंचा पिता प्रतीक्षा में ही था वह भी
पायलेट के साथ वैठ गया पल भर में मशीन हवा में उडने लगी दो
हजार फुट ऊपर पहुचते ही बलदेव बोला -- "इस काउंटर से
अभी इतनी ऊंचाई से ही दबे हुए यूरेनियम की जांच कर
लें"

"ठीक है तैयार है", पिता ने कहा -- "गति दो जरा"

श्वेत विज्ञानशाला के ऊपर से मडराते हुए बलदेव ने यान को धीमा किया तुरन्त ही काउटर में आवाज आने लगी

"काउटर यूरेनियम का पता दे रहा है", विश्वनाथ मुस्कुराया

"पाच हजार फुट ऊचे उडकर देखें भला" -- बलदेव ने यान को लगभग ठहराते हुए, यन्त्र को परखा काउटर तनिक कम स्पष्ट था "काम तो यहा भी कर रहा है' पिता ने जाच की, पर अब निराशा हाथ लगी

"एक और नया ढग समझ मे आया है पिताजी -- बलदेव अकस्मात बोल उठा

7 हेलीकॉप्टरों का परीक्षण तथा एक विस्फोट

पिता के सग मुख्य कार्यालय में पहुचते ही बलदेव का तार मिला जिसमें उसके साथ पायलट हरीश ने अन्तरिक्ष प्रयोगशाला की अगले दिन प्रथम उडान भरने के लिए स्वय पहुचने की सूचना दे रखी थी

"ओहो ! उसने हमें प्रथम उडान की तैयारी का कुछ समय तो दिया होता" -- बलदेव ने अचम्भा प्रकट किया

"यदि हम सभी जुट जाएं तो तैयारी में क्या देरी ?" -- पिता ने कहा "हरीश ने यन्त्रों की जांच तो करनी नहीं"

बलदेव तत्काल भूमिगत छप्पर में प्रयोगशाला की रही-सही कमी को देखने के लिए गया वहां सिवाए कम्पास (दिशा सूचक यन्त्र) के सब कुछ ठीक था उसने बिजली के इजीनियर से मिलकर उसे भी ठीक कर दिया

"अब कोई परेशानी नहीं होगी" -- बलदेव ने सतोष व्यक्त

किया और अपने मित्र विद्याधर को ढूढने चला गया

"कल हमारा मित्र हरीश अन्तरिक्ष प्रयोगशाला की उड़ान के लिए आ रहा है हमें छोटे दोनों पोत काग तथा गरुड को उस शाला पर ठहराने की पूरी व्यवस्था कर लेनी चाहिए उनकी दौड में मैं तो छोटे हवाई जहाज को थामता हूं, और तुम दूसरे हेलीकॉप्टर को इन दोनों की जांच करते हैं, तुम्हें दस मिनट देता ह'

काग और गरुड दोनों की बाजी लग गई

'हम दोनों दस मील की दौड लगाएगे जगल के उन दो बड पेडो के बीच मे धरती को पहले कौन छुएगा देखते हैं', बलदेव ने शर्त तय कर दी

विद्याधर कुछ गुनगुनाया और पलों म हवा से बातें करने लगा उतनी देर में बलदेव ने भी कला दिखाई और माइक पर बोला "मित्र ! तुमसे पहले ही मैं धरती को छू रहा हू' तभी उसके यान का घूमना भी मुश्किल हो गया कुछ ऐसी गडबडी-सी प्रतीत हुई

"अब तो सकुशल लौटना भी गनीमत होगा, जीतना तो एक तरफ" -- बलदेव फुसफुसाया

बडा कठिनाई से यान को वह घुमा-फिरा कर अपने लक्ष्य की ओर जा सका श्वेतशाला म पहुचने पर विद्याधर को उसने पहले ही वहा मुस्कुराते हुए पाया

"बस ! इस छकाडे गाडी को बेचोगे" -- विद्याधर ने फबती उडाई

"अरे मित्र, यान का पतवार जाम हा गया था क्या करता

दोनों ने उसके यान की जाच करके तारों की उलझन को सुलझा दिया

"लो एक अवसर और सही" विद्याधर बोला।

सकेत पाते ही दोनों पायलट हवा से बातें करने लगे अब के

वलदेव ने सांस भी नहीं लेने दिया और यान को पूरा चक्कर कटवाकर वापिस वहीं छोड दिया

जव विद्याधर लौटा तो वलदेव उसकी ओर विजयपूर्ण दृष्टि से देख रहा था

"मै तो हमारे क्षेत्र में जो उल्कापात हुआ था उसके सकेतों का हिसाब लगा रहा था, मै कव का लौट आया हू"

"मान गए दोस्त ! मैंने हार मान ली तुम्हारे यान को मै भी किसी समय देखूगा" -- विद्याधर ने उसके यान के ढाचे की सराहना करते हुए कहा

वलदेव ने दोनों पोतों की गति की जाच की और उनके काम पर सतोष व्यक्त करते हुए कहा -- "इधर से तो हम निपट गए अव इनको अन्तरिक्ष प्रयोगशाला पर लटकाना है"

उन दोनों ने अन्तरिक्ष यान से वाधने की सभी तारों और अन्य प्रकरणों की जाच कर ली तव विद्याधर ने पूछा "कहो उस आकाश से गिरने वाले द्रव्य (उल्कापात) के संकेतों को कुछ पढ पाए हो ?"

"अभी तो नहीं न ही पिताजी उन सकेतों को पढ पाए है" अभी तो वे रहस्य ही वने हुए हैं"

"वे देखो ऊपर मंगलग्रह पर कुछ परिया-सी दीख रही है, उस ग्रह के वैज्ञानिक हम धरती के निवासियों पर फवती उडा रहे हैं" -- विद्याधर ने ऊपर की ओर देखते हुए कहा

"कुछ वैज्ञानिकों के ख्याल से तो वे उस मंगल ग्रह के विशाल प्राणी हैं" -- वलदेव ने वताया

अगली प्रात अन्तरिक्ष यान को उडान के लिए अन्तिम रूप दे दिया गया दोनों वाप-वेटे को अव तसल्ली थी

"एक चीज का हमें विशेष ध्यान रखना होगा कि इसकी उडान

रु पूर्व एसी व्यवस्था कर लें कि नीले आकाशीय-मण्डल की व्रह्माण्ड किरणों का कुप्रभाव इस पर न पडे" वलदेव ने गम्भीर होकर कहा

"वेटा, विल्कुल ठीक कहते हो अन्तरिक्ष में न जाने क्या-क्या आश्चर्य सामने आ सकते हैं जिनके लिए हमारे प्रयोग तक तैयार भी न हों" -- पिता ने समर्थन करते हुए कहा

"अन्तरिक्षयान को यदि एक विशेष प्रकार के द्रव्य के पर्दे से ढँक दिया जाए तो कैसा रहे ?" पुत्र का सुझाव था

"वढिया विचार हैं" -- पिता ने स्वीकृति देते हुए कहा - "उस पर्दे का विशेष वोझ भी नहीं होगा"

"मै प्रवन्ध करवाता हूँ" -- पुत्र ने जिम्माई लेते हुए कहा

इसके वाद दोनों पिता तथा पुत्र अपने मित्र हरीश, सहयोगी पायलट को मिलने गए तभी ऊपर से जेट इन्जन की उडान की आवाज सुनाई पडी

"हरीश ही तो है" वलदेव चौंका

"वस उसे पहुचा ही समझो" विद्याधर वोला

तभी वलदेव ने अपने मित्र का वाजू पकडते हुए कहा - "देखो उधर तो गडवड हो गई मालूम पडती है" उनके देखते-देखते चौंधियाने वाला प्रकाश तथा धमाका साथ ही साथ हुए, वायुयान में विस्फोट हुआ था

8 हरीश घटना ग्रस्त

दोनों ही मूक होकर ऊपर ही देखते रह गए

"यह रही हवाई छतरी" बलदेव चिल्ला उठा "वह वन में उतर रहा है"

तीनों ने वहा खडे सतरियों को अचम्भे में डालते हुए कार में बैठ कर दौड शुरु कर दी

"आधी मील से अधिक दूर नहीं है" -- विद्याधर ने गभीर होकर दौडते हुए कहा

"हरीश जरुर परेशानी में फस गया होगा" बलदव ने चिन्तित होकर कहा

उसकी सीटें भी तो जरा से धमाके से उड जाने वाली थी"

'भगवान भला करे" -- विश्वनाथ ने शुभ कामना व्यक्त करते हुए कहा

एक तग मोड पर एकदम कार को घुमाते हुए बलदेव ने कहा उसे यहीं कही उतरना चाहिए

उस मरुभूमि में इधर-उधर सभी जगह को उन लोगों ने छान मारा

"वह देखो लटक रहा है" -- विद्याधर ने एक पेड की ओर सकेत करते हुए कहा वहा से हरीश का शरीर जमीन से पद्रह फुट ऊचा लटका हुआ नजर आया

विश्वनाथ न तुरन्त प्राथमिक चिकित्सा वाला बक्स निकाला और पायलट की मदद के लिए दौडा

'वही हरीश ही तो है" -- बलदव ने विश्वास पूर्वक कहा

पायलट क छाते का कपडा पड की ऊपर की टहनियों में उलझा हुआ था उसका चेहरा लहू-लुहान था तथा दाया बाजू टेढा होकर लटक रहा था

हरीश को यद्यपि होश था परन्तु भौंचक-सा देख रहा था कि वे लोग न-जाने किस उद्देश्य से आए है

"हम अभी तुम्हें आराम से नीचे उतारते हैं" -- बलदेव ने धैर्य बधाते हुए कहा

बलदेव तथा विद्याधर अविलम्ब पेड पर पायलट से ऊचे स्थान पर चढ गए और छाते की रस्सिया काटकर उसे धीरे से नीचे उतारा जहा विश्वनाथ ने थाम लिया

हरीश थोडा होश में आया पसीने से वह भीग रहा था, परन्तु उसके सारे शरीर में दर्द हो रहा था

मेरे कन्धे की हड्डी उतर गई है सदा ही ऐसा हुआ करता है" उसने अस्पष्ट शब्दों में कहा--"मेरे बाजू को जरा खींच दो"

बलदेव ने उसके कन्धे को जोर से दबाकर बाजू को ठिकाने से कर दिया, हरीश ने आह भरी और साथ ही धन्यवाद की मुस्कान भी

"मेरा आगमन भी बढिया रहा" हरीश बोला

"कोई बात नहीं शुक्र है तुम सुरक्षित हो" -- बलदेव ने कहा

विश्वनाथ ने उसका विद्याधर से परिचय करवाया और हरीश की गाल की हड्डी पर चोट को देखा साधारण चोट थी रोगाणु रोधक दवाई लगा दी गई तथा चकती चिपका दी गई

हरीश ने उठने का प्रयत्न किया परन्तु उसकी एक टांग ने जवाब दे दिया, विद्याधर तथा बलदेव ने तभी उसे सभाल लिया

"सीधे हस्पताल चलते हैं" विश्वनाथ बोला

"जाने से पूर्व यान की हानि का भी अनुमान जरा सा-लगा लें क्योंकि शत्रु द्वारा तोड-फोड का कोई प्रमाण भी तो चाहिए" -- हरीश ने कहा

"तोड-फोड" बलदेव ने दोहराया -- "पोत के विस्फोट में शत्रु की शरारत है" ?

हरीश गंभीर हो गया और उसका चेहरा काला पड गया

"यह रही हवाई छतरी" बलदेव चिल्ला उठा "वह वन में उतर रहा है'

तीनो ने वहा खडे सतरियों को अचम्भे में डालते हुए कार में बैठ कर दौड शुरू कर दी

"आधी मील से अधिक दूर नहीं है" -- विद्याधर ने गंभीर होकर दौडते हुए कहा

' हरीश जरूर परेशानी में फस गया होगा" बलदेव ने चिन्तित होकर कहा

'उसकी सीटें भी तो जरा से धमाके से उड जाने वाली थी

भगवान भला करे" -- विश्वनाथ ने शुभ कामना व्यक्त करते हुए कहा

एक तग मोड पर एकदम कार को घुमाते हुए बलदेव ने कहा उसे यही कहीं उतरना चाहिए"

उस मरुभूमि में इधर-उधर सभी जगह को उन लोगों ने छान मारा

"वह देखो लटक रहा है" -- विद्याधर ने एक पेड की ओर संकेत करते हुए कहा वहा से हरीश का शरीर जमीन से पद्रह फुट ऊचा लटका हुआ नजर आया

विश्वनाथ ने तुरन्त प्राथमिक चिकित्सा वाला बक्स निकाला और पायलट की मदद के लिए दौडा

"वहा हरीश ही तो है" -- बलदेव ने [illegible] हा

पायलट के छाते का कपडा [illegible] में उलझा हुआ था उसका चेहरा लहू-[illegible] होकर लटक रहा था

हरीश को यद्यपि होश था परन्तु [illegible] वे लोग न-जाने किस उद्देश्य से आए है

"हम अभी तुम्हें आराम से नीचे उतारते हैं" -- बलदेव ने धैर्य बंधाते हुए कहा

बलदेव तथा विद्याधर अविलम्ब पेड पर पायलट से ऊंचे स्थान पर चढ गए और छाते की रस्सिया काटकर उसे धीरे से नीचे उतारा जहां विश्वनाथ ने थाम लिया

हरीश थोडा होश में आया, पसीने से वह भीग रहा था परन्तु उसके सारे शरीर में दर्द हो रहा था

"मेरे कन्धे की हड्डी उतर गई है सदा ही ऐसा हुआ करता है" उसने अस्पष्ट शब्दों में कहा--"मेरे बाजू को जरा खींच दो"

बलदेव ने उसके कन्धे को जोर स दबाकर बाजू को ठिकाने से कर दिया, हरीश न आह भरी और साथ ही धन्यवाद की मुस्कान भी

"मेरा आगमन भी बढिया रहा" हरीश बोला

"कोई बात नहीं शुक्र है तुम सुरक्षित हो" -- बलदेव ने कहा

विश्वनाथ ने उसका विद्याधर से परिचय करवाया और हरीश की गाल की हड्डी पर चोट को देखा साधारण चोट थी रोगाणु रोधक दवाई लगा दी गई तथा चकत्ती चिपका दी गई

हरीश ने उठने का प्रयत्न किया, परन्तु उसकी एक टाग ने जवाब दे दिया विद्याधर तथा बलदेव ने तभी उसे सभाल लिया

"सीधे हस्पताल चलते हैं" विश्वनाथ बोला

"जाने से पूर्व यान की हानि का भी अनुमान जरा सा-लगा लें क्योंकि शत्रु द्वारा तोड-फोड का कोई प्रमाण भी तो चाहिए" -- हरीश ने कहा

"तोड-फोड" बलदेव ने दोहराया -- "पोत के विस्फोट में शत्रु की शरारत है" ?

हरीश गभीर हो गया और उसका चेहरा काला पड गया

"मुझे तो ऐसा ही लगता है क्योंकि जब से मुझे वायु सेना के पायलट का काम मिला है परेशानी ही रही है जहाज के बोर्ड पर बम रखा प्रतीत होता है"

उन्होंने हवाई छाते के टुकडे इकट्ठे किए और जहाज के बिखरे हिस्सों की तलाश में चल दिए आधी मील तक टुकडे बिखरे पड़े थे

"जासूसी विभाग के लिए तोड़-फोड़ का प्रमाण ढूंढना कठिन है" बलदेव ने टिप्पणी की

विद्याधर ने जहाज के छोटे-छोटे टुकडों को ठोक-बजा कर देखा और बोला "जासूसी विभाग के बस का भी यह काम नहीं"

विश्वनाथ ने जाच विभाग को फोन करके मलबे पर गारद नियुक्त करने के लिए सूचना दी

उसी बीच में हरीश को बलदेव अपने अन्तरिक्ष यान का ब्यौरा देता गया

उस विशाल जहाज की प्रथम जाच की उम्मीद में वायुसेना के कुशल खिलाडी पायलट हरीश की आखें चमक उठीं तभी उसे अपने घावों की याद हो आई

"मैं आप लोगों को रोके नहीं रख सकता" उसने कहा -- "न जाने इस टाग के कारण हस्पताल में कब तक रहना पड़े आशा है कि हड्डी टूटी नहीं"

बलदेव ने तब तक प्रतीक्षा करने का आश्वासन दिया "डॉक्टर की रिपोर्ट भी देख लेते हैं"

कुछ ही घटों बाद पायलट ने फोन किया कि टाग में गहरा घाव नहीं है और दो-तीन दिन में ही वह अन्तरिक्ष प्रयोगशाला की जांच कर सकेगा

"बढ़िया" -- बलदेव बोला "हम प्र

तभी उसने भूमिगत अन्तरिक्ष प्रयोगशाला को धरती पर लाने के लिए भारी क्रेन की पडताल की और उसके लिए आदेश भी दे दिए उसे कुछ शान्ति मिली, अब उसने अपना ध्यान यूरेनियम की खोज की ओर लगाया

थोडी ही देर बाद विद्याधर ने उसे भूमिगत छप्पर में एक लिफाफे की दूसरी ओर एक खाका खींचते हुए पाया

"यह क्या" ?

"मेरे दिमाग की उपज" बलदेव का उत्तर था

"किस सम्बन्ध में" ?

"किस रूप में यह नया विचार है" ? विद्याधर ने पूछा

बलदेव ने घुघराले बालों पर हाथ फेरते हुए कहा -- "वह यन्त्र हमारे पहले यन्त्र (गीगर) से सर्वथा भिन्न है मैं चक्षु सम्बन्धी प्रयोगशाला में काम करने जा रहा हू, चलोगे" ?

"अरे असाधारण बुद्धि के मालिक करो अगवानी, यदि कोई नई चीज है तो मैं भी साथ हू" विद्याधर बोला

"उसमें समय लग सकता है"

"मैं बराबर तुम्हारी मदद करूँगा"--विद्याधर ने श्रद्धा व्यक्त की

अन्तरिक्षयान के हाल ही में सजाए गए शयन कक्ष में व दोनों जने गए, अन्दर एक लम्बे बैंच पर प्रकारें, पीसने वाले पहिए, शीशे तथा अन्य अनेक प्रकार के यन्त्र पडे थे

बलदेव ने बटन दबाया और चमकते हुए कमरे में अलमारी खोलकर बिल्कुल नए उपकरण दिखाए जो कि विद्याधर ने कभी देखे ही नहीं थे वह देखता ही रह गया

"फोटोग्राफी के ये यन्त्र ! ये क्या काम करेंगे ? मैं तो समझता था तुम यूरेनियम की खोज का यन्त्र बनाने जा रहे हो"

"बिल्कुल" । बलदेव बोला "फोटोग्राफी तो उसी का एक भाग होगा"

"ऊं हूँ । रेडियोधर्मी सम्बन्धी कुछ न कहना" विद्याधर ने सन्देह व्यक्त किया

बलदेव अपने ही ध्यान में मगन रहा, वह प्रसन्न चित धीरे-धीरे सीटी बजाता गया जिससे विदित होता था कि उसका प्रयोग ठीक चल रहा था

सहयोगी पायलट विद्याधर चकित होकर उस कैमरे की ओर ही देखता रहा जो कि एक पुराने ढग का प्रतीत होता था

' अरे दोस्त । यह कैसा प्रयोग कर रहे हो" ? वह हार कर बोला

"आकाश की किरणों के क्षय करने के सम्बन्ध में क्या होगा, इसकी प्रतीक्षा करो"

"रेडियोधर्मिता ? विद्याधर बोला

"बिल्कुल । और आगे ?" बलदेव ने पूछा

मैं तो आगे कुछ कह नही सकता" -- विद्याधर ने सिर खुजलाया

"इससे पास वाले अणु फैलते हैं और प्रकाश होता है हम इससे काफी दूरी पर भी धातु का पता लगा लेंगे"

"अरे मित्र । रात के खाने का समय भी निकल चुका है"

"आज तो होटल में मीट-ब्रेड उडेगी माता जी को सूचना दे दो वे प्रतीक्षा न करें" -- बलदेव ने कहा

उन दोनों ने वहीं पर रात्रि के खाने का प्रबध कर लिया

बलदेव रात भर प्रयोग में ही व्यस्त रहा

"अरे विद्याधर । तुम अच्छी मदद कर रहे हो । खर्राटे भर रहे हो" मित्र को झकझोरते हुए बलदेव बोला

"हा, कहो"

"अरे भाई, हमारा करिश्मा जरा देखो तो, यह मेरा आविष्कार पर्वतों व मैदानों मे गहरे दवे हुए यूरेनियम का पता दे सकेगा", अपनी विजय मे प्रसन्न होकर बलदेव ने कहा

"तुम तो सचमुच ही विश्वकर्मा हो"

"सब प्रभु की अनुकम्पा है देखे कहा तक सफल होते हैं

"दोस्त परिश्रमी जीव के लिए सब कुछ सुलभ है, तुम उन लोगों में से हो जो उचित परिश्रम करके किसी भी बात को असभव नहीं मानते, तुम तो जन्म से ही प्रतिभाशाली हो" -- विद्याधर ने मित्र की सराहना करते हुए कहा

"तुम्हारे साधुवाद के लिए धन्यवाद"

७ युम्न स्कोप

"तुम्हारा यन्त्र तो बडा विकट नजर आता है', विद्याधर ने कहा "इस आविष्कार का प्रयोग कब करने जा रहे हो ?

'प्रात दस बजे"

अब वे दोनों तैयार होकर घर की ओर चलने लगे

"अरे ! मैं तो भूल ही गया", बलदेव को कुछ नई सूझ हो आई है क्योकि वह सदैव नई बातें ही सोचा करता था

'मै अपने अनुभवी मित्र अरुण को बुलाने जा रहा हू, देखभाल के लिए, तुम घर चलने के लिए कार में बैठो, क्षणभर में मै भी आता हू

उसने फोन करते हुए कहा "बलदेव बाल रहा हूं अरुण तुरन्त यहा पहुचो"

शीघ्र ही प्रमुख द्वारपाल अरुण हांपता हुआ आ पहुंचा

"यहां विशेष यन्त्र पड़ा है इसकी चौकसी रखना"

"मैं अभी एक होशियार संतरी को नियुक्त करता हूँ, बल्कि चारों ओर पहरेदार खड़े हो जायेंगे, आप निश्चित रहें"

बलदेव मित्र के साथ कार में बैठकर श्वेत गृह (अपने घर) पहुंचा वहां जाते ही वह सो गया थोड़ी गहरी नींद लेकर उठा और नाश्ता करके कारखाने में पहुंचा

उसका पिता नक्शे का अध्ययन कर रहा था

"बेटा ! तुमने बहुत देर लगा दी रात भर अपने आविष्कार में ही लगे रहे"

"जी हां" बलदेव ने अपना योजना का सामन रखते हुए कहा - "यन्त्र तो बन चुका है आज ही इसकी जांच की जाए"

"कमाल है" विश्वास तो नहीं होता, तुम तो आजकल मेरे से भी तेज़ दौड़ रहे हो"

"कृपया चलकर देखिए तो"

"चलो मुझे रास्ते में इसका ब्यौरा भी देते चलो"

वहां पहुंचने तक उसे नए यन्त्र का पूरा ब्यौरा मिल गया

"सिद्धान्त तो ठीक है" - विश्वनाथ ने कमर की चाबी लगाते हुए कहा - "यह बात अभी विश्वास करने योग्य नहीं कि तुम्हारा नया यन्त्र हमारे पहले यूरेनियम को ढूंढने वाले गीगर से बेहतर होगा उसे खोजने में तो बरसों लगे थे"

"आप भी ठीक ही कहते हैं पिता जी" । परन्तु इस यन्त्र को बनाने में मुझे चाहे बारह घंटे ही लगे हैं फिर भी इसकी कल्पना बहुत दिनों से थी"

अरुण ने उनका घुसते ही स्वागत किया

"तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद" - बलदेव बोला

अरुण के चले जाने पर बेटे ने पिता से अपने आविष्कार को भली प्रकार से देखने की प्रार्थना की "अभिमान की भले ही बात हो" - पिता ने ध्यान से देखते हुए कहा "परन्तु यह बात निश्चित है कि तुम्हारा क्रान्तिकारी यन्त्र यूरेनियम की खोज में अपनी [illegible] का आप ही होगा"

"आप की शाबाशी से मैं गद्गद हो गया हूँ" बेटे ने कहा -- "शीघ्र ही इसकी जाच करने मैं तथा विद्याधर अपने भारवाहक पोत में जा रहे हैं पिता जी, आप भी चलिएगा"

"अवश्य"

"बहुत बढ़िया, मैं छप्पर में नियुक्त कारीगरों को मशीन को गर्म करने को कहता हूँ समय हो गया है विद्याधर भी पहुचने ही वाला है"

"इस नए यन्त्र का नाम क्या रखोगे" ?

"पिताजी अपने श्रद्धेय गुरु द्युम्न की स्मृति में द्युम्न स्कोप नाम ठीक होगा"

"इससे अच्छी श्रद्धाजली दिवगत आत्मा को अमर बनाने की और क्या हो सकती है ? इस सज्जन वैज्ञानिक ने तुम्हें इस क्षेत्र में प्रवीण बनाने में कोई कसर नही छोडी थी ऐसे परोपकारी जीव संसार में दुर्लभ हैं"

इतनी देर में विद्याधर भी आ पहुंचा

"मैं इस काले बक्स को लेकर उडने के लिए तैयार हू" - द्युम्न स्कोप की ओर दृष्टि डालते हुए वह बोला "नमस्कार चाचा जी"

"आशीर्वाद ! रात भर जगराते के बाद तुम अब स्वस्थ प्रतीत होते हो" - विश्वनाथ बोला

"हमारी तैयारी पूरी है पिताजी भी साथ जा रहे हैं इस यन्त्र का नामकरण कर दिया है द्युम्नस्कोप" - बलदेव ने कहा

उस विभूति द्युम्न के नाम पर जिसकी चर्चा तुम प्राय किया करते हो ?" विद्याधर ने पुष्टि की

"वही-वही ।। अब तो इसे हवाई पट्टी पर ले चलें"

दोनों ने यन्त्र उठाया विश्वनाथ भी साथ हो लिया भार वाहक पोत छप्पर से बाहर पट्टी पर गुनगुना रहा था उन दोनों ने यन्त्र को इस प्रकार हवाई जहाज पर जँवाया कि उसके शक्तिशाली ताल (शीशे) फर्श के बीच में से धरती की ओर उभरे हुए मालूम हो

विद्याधर ने पोत का नियन्त्रण समाला "तैयार" ?

"अब ठीक है चलिए" बलदेव ने उत्तर दिया पोत के आकाश म उडते हा बेटा बोला-- 'पिता जी इस यन्त्र को पहले आप ही परखिए'

यही मैं भी चाहूगा"

मित्र ! जहाज को दबी हुई यूरेनियम के ऊपर से ले चलो" - बलदेव ने ऊची आवाज़ से कहा

"यह लो" - विद्याधर ने दस हजार फुट की ऊचाई पर उडते हुए कहा "मैं अब दबी धातु पर से ले जा रहा हूँ"

विश्वनाथ ने द्युम्न स्कोप का बटन दबाया कैमरा घर्र-घर्र करने लगा- पोत ने उसी जगह पर कई उडानें भरीं

"ठीक है अब मै इसी कैमरे म फिल्म विकसित करने की भी व्यवस्था करता हूँ" बलदेव खुश होकर बोला

यन्त्र ने अब के बढिया आवाज दी

"यन्त्र तो बहुत स्पष्ट संकेत दे रहा है" - बलदेव ने कहा पिता ने बेटे की ओर प्रशंसा पूर्ण दृष्टि से देखा

"बहुत-बहुत मुबारिक" ।। विश्वनाथ मुस्कराया - "बेटा मुझे तो अभी तक शक ही था कि यह यन्त्र काफी अधिक मेहनत मांगता

होगा, परन्तु यह तो कमाल हो गया"

विद्याधर जो आगे नियन्त्रण पर बैठा इस सूचना से अनभिज्ञ ही था उछल पडा "मैं इस मेधावी युवक वैज्ञानिक के आगे नतमस्तक हूँ" पायलट ने कहा - "अब हमें वरुण देश के शत्रुओं को मात करने में कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती उधर कब चलेंगे" ?

"जल्दी से जल्दी' - विश्वनाथ ने आश्वान दिया - "सहयोगी पायलट हरीश की जाच उडान के लिए तैयार होने तक हमारी अन्तरिक्ष प्रयोगशाला यन्त्रों से पूरी तरह लैस हो जाएगी"

"यदि परीक्षण सफल रहता है तो वरुण देश में यूरेनियम के भण्डार ढूढने के लिए हमारे अन्तरिक्ष यान को चलने में देरी नहीं लगेगी" बलदेव ने आगे कहा

विद्याधर ने हवाई जहाज पट्टी पर उतारा द्युम्नस्कोप को तहखाने में सभाल दिया गया तब व तीनों ही अपने-अपने काम के लिए चले गए एक घटा बाद बलदेव हरीश को फोन करने गया तो विश्वनाथ वहीं बडी इमारत में मौजूद था

"बेटा, तुम्हारे लिए विशेष सूचना है" - वह बोला - "पुलिस को जो भेदिए के पकड़ने की सूचना दी थी वे लोग उसे ढूंढने में काफी हद तक सफल होने जा रहे हैं तुम्हारा हेलीकॉप्टर गरुड भी तो वही उडा कर ले भागा था" ?

"बढिया खबर है" - बटे ने उत्तर दिया - "वह है कहा" ?

"यह तो वे नही जानते पर जब हम लोग उस भवन में भाषण दे रहे थे तो वह जासूस पास ही कमरे में रह रहा था वही से वह जल्दी में खिसक गया

"दूसरी विशेष सूचना यह है कि हमारे साथ काम करने के लिए हेमक वैज्ञानिक मडली के अध्यक्ष राकेश सेन की ओर से यश

नाम का व्यक्ति आ रहा है"

"कैसा काम" ?

"हमारे अभियान के कठिन काम में हमें जानकारी देने के लिए" विश्वनाथ ने स्पष्ट किया - "साथ ही अध्यक्ष की इच्छा है कि वरुण देश के जलवायु तथा रीति-रिवाजों से भी हम खूब परिचित हो जाएं"

वलदेव मुस्कराया - "वरुण देश के पास व वहां के लोगों के इतिहास की पूरी जानकारी हो जाएगी न"

"वह सज्जन आज किसी समय पहुँच सकता है मॉं को फोन कर दो कि दोपहर का भोजन वह शायद घर पर ही करेगा" -- विश्वनाथ ने कहा

वलदेव ने मॉं को फोन किया और संदेशा देने से पहले वह बोला "मा जी, मेरा अविष्कार सफल रहा है, इसका नाम हमने द्युम्न स्कोप रखा है"

"खूब मुझे बडी खुशी हुई है, बेटा"

"शान्ति घर पर है क्या" ? वह बहन को सबसे पहले बताना चाहता था

"नहीं वह अपनी सहेली के संग घुडसवारी के लिए गई हुई है बाद दोपहर लौटेगी" वे दोनों सहेलियां घुडसवारी की बडी शौकीन थीं

"आपने उन्हें पिछली सडक से न जाने के लिए सावधान नहीं किया था"

"हा हां उसने रौनक वाली सडक से जाने का वचन दिया था"

फोन रखते ही कुमारी बोली की श्री यश पधारे हैं"

"अरे ! वह सज्जन तो आ भी गए" वलदेव फुसफुसाया

वढ़िया फ्रेम वाली ऐनक लगाए आगन्तुक का अभिवादन दोनों बाप-वेटे ने किया

"आपके दर्शन करके प्रसन्नता हुई" - एकदम चिट्टे दात दिखाते हुए वह युवक वोला - "मुझे हेमक वैज्ञानिक सभा के अध्यक्ष श्री सेन राकेश ने भेजा है मेरा नाम यश है" - अपना परिचय पत्र आगे वढाते हुए वोला

वाप-वेटे ने वारी-वारी हाथ मिलाए - विश्वनाथ ने पत्र पढा और वेटे ने उसे गौर से देखा उसने अपने सम्मेलन में तो इसे देखा नही था

"आप सम्मेलन में तो नहीं थे" - कुर्सी देते हुए वलदेव ने कहा

"कौन-सा सम्मेलन" ?

"हेमक विज्ञान सम्मलन जिसमें मेरा और पिताजी का भाषण था"

"नहीं मैं जव तक इस प्रदेश म आया भी नहीं था"

पत्र पढते ही विश्वनाथ बोला "श्री यश प्रधान जी लिखन है कि हम एक-दूसरे से भली प्रकार परिचित हो जाए तथा [illegible] योजना में आपसे सहायता भी लें"

"आप लोगों के पास भी तो वैज्ञानिक सामग्री काफी है जिसकी जानकारी मैं लेना चाहूगा आप लोगों की वहु-चर्चित अन्तरिक्ष प्रयोगशाला भी देखने को मैं उत्सुक हू"

वलदेव अशान्त मन से उसकी वात सुनता रहा क्योंकि इतनी महत्वपूर्ण जानकारी देने से पूर्व स्वयं ही तो तसल्ली कर लेना चाहता था

थोडी देर चुप रहकर वह वोला "आपके प्रदेश का उपनाम भी वडा विचित्र सा है

आपका मतलव वाशव ? विचित्र तो है ही'

वलदेव जरा ढीला पड गया क्योंकि उसका शक निर्मूल था

तभी मा का फोन आया - "वलदेव, भगवान का शुक्र है तुम मिल गए"

"क्या हुआ ? कुशल तो है मा जी ? वह धीरे से वोला

"शान्ति को छोडकर घोडा अकेला ही घर लौट आया है' - कापती हुई आवाज मे मा वोली- तुम अपने "पिताजी से अभी कुछ न कहना मैं तो वहुत वेचैन हू, क्योंकि हमें धमकी भी मिली है"

10 श्वेत परिवार पर विपत्ति

"मैं अभी पहुचता हू" - वलदेव ने आश्वासन दिया

क्षमा मागते हुए दफ्तर से वाहर वह निकला - तभी सामने से विद्याधर की जहाजों के छप्पर से निकलते ही भेंट हो गई उसे मा के सदेश मे अवगत करवाया

"चलो तुम भी मदद के लिए साथ हो लो" - वलदेव वोला कार पार्क की ओर दौडे

"यदि शान्ति को कोई चोट लग गई तो" - वह गम्भीर होकर कहने लगा

विद्याधर ने मुट्ठी भींची - "मैं भी उस माई के लाल, चोट पहुचाने वाले को देख लूंगा"

कार पूरी गति से गुजरती हुई सडक पर भागने लगी

श्रीमती विश्वनाथ द्वार पर खडी प्रतीक्षा कर रही थी जवकि कार एकदम रुकी । मां का आकर्षक चहरा गम्भीर था और वह

आसू रोक नहीं पा रही थी

"घबराइए नहीं मा जी ! हम शान्ति को ढूढ कर छोडेगे बलदेव ने तसल्ली दी - "धमकी देने वाला था कौन" ?

"कोई अपरिचित ही था नामधाम तो उसने बताया नहीं बस इतना ही कहा कि तुम्हें चेतावनी दी गई थी कि हमारे आदमी का पीछा न करें"

"कुछ और भी कहा" ?

"यह भी कहा कि यदि पुलिस हमारा पीछा करेगी तो तुम लोगों को परेशानी उठानी पडेगी"

बलदेव समझ गया कि पुलिस तो शत्रु का पीछा कर ही रही है, वे लोग शान्ति का अपहरण करना चाहते है, वह शायद उनकी कैद में हो

"माता जी, उसकी सहेली जो साथ थी क्या वह भी नही लौटी ?"

"वह तो लौट आई है हवाई पट्टी पर वे अलग हुई थीं शान्ति अब वहा नही थी"

इतनी देर में घबराई हुई सहेली भी पहुच गई - चाची जी शान्ति का क्या बपत हो गई ?"

"उसका पता ही नही" श्रीमती विश्वनाथ ने कहा - "तुम्हें हवाई पट्टी पर छोडते समय उसने बताया था कि वह कहा जा रही है ?"

उसने इतना ही कहा था कि अपने बुजुर्ग शिक्षक के घर जाऊगी शायद उधर ही चली गई हो"

बलदेव ने फोन किया तो पता लगा कि वहा से गए भी उसे आधा घटा हो चुका है और वह नदी तट के साथ वाले मार्ग से घर गई थी

"शायद रास्ते में गिरकर घायल पड़ी हो" - मां ने सन्देह व्यक्त किया

"अभी उसे ढूंढ लाते हैं" - बलदेव चिल्लाया और विद्याधर के साथ घर से दौड़ पड़ा

सहली के आग्रह पर उसे भी उन्होंने कार में बिठा लिया और वे उसके शिक्षक के घर को भी पार कर गए

नदी के तट पर वे पहुंचे जगल का रास्ता था कार के निशान तो वहां पड़े थे परन्तु वहां कई घोड़ों के खुर भी लग रहे थे

"शान्ति शान्ति" - बलदेव चिल्लाया

कोई उत्तर न पाकर वे नदी के मार्ग से इधर-उधर दौड़े, पर कुछ भी पता न लगा

"अब ' विद्याधर ने पूछा"

तीनों ने फैसला किया कि सहेली तो उस मार्ग से शान्ति को घर तक ढूंढती हुई जाए तथा वे दोनों जगल में तलाश करें

"उस शत्रु की धमकी के बाद शन्ति के यहां होने की सभावना है ?" विद्याधर ने पूछा

"उसके अपहरण किए जाने के बारे में भी कुछ नहीं कहा जा सकता" - बलदेव का उत्तर था

उन दोनों ने जंगल को काफी देर तक छान मारा पर शान्ति का सुराग कहीं न मिला

"जगल का एक कोना अभी देखना बाकी है"-विद्याधर बोला

"मैं तो जगल की एक-एक झाड़ी तक भी नही छोड़ूगा जब तक वह नही मिलें" - बलदेव ने विश्वास व्यक्त किया

कुछ मिनटों के बाद वे वहीं पहुचे जहा इन्होंने पहले कार ठहराई थी

"वह देखो पांव से रौंदी हुई झाडिया" - बलदेव भडक उठा - "और घोडों के खुरों के चिन्ह - यहा पर घोडा बेकाबू हो गया होगा"

थोडी दूरी पर झाडिया दबी पडी थीं और मिट्टी इधर-उधर हट रही थी वहीं पर आदमी और घोडे के पाव और खुर के निशान इकट्ठे लग रहे थे

"इसस आगे झाडी और भी दबी हुई नजर आती है" - बलदेव ने सकेत करते हुए कहा - "देखो विद्याधर, शान्ति ही तो नजर आ रही है"

एक छोटे पड के साथ शान्ति को बाध रखा था और उसके मुह मे कपडा ठूसा हुआ था भाई ने मुह से कपडे को निकाला और विद्याधर ने झट से रस्से को खोला

"अरे बलदेव ! बहन ने गले लगकर कहा "विद्याधर तुम्हारा लाख-लाख धन्यवाद"

"बिल्कुल ठीक हो न बहन ?" भाई ने बाह ढीली करते हुए कहा

शान्ति कमजोरी के कारण बोल न सकी वे समझ गए कि वह सहमी हुई है पर चोट कोई नहीं आई

उस मार्ग के समतल टीले पर ले जाकर भाई ने उसे चौडे पत्ते का कप बनाकर पास ही बह रहे झरने से पानी पिलाया

"यदि बोल सकती हा तो", भाई ने पूछा - "घटना के बारे मे बताओ"

"अब ठीक हूँ" - वह बोली - "परन्तु उस भयानक पुरुष तथा स्त्री ने"

"शुरु से बात बताओ"

"लो मै जगल में दाखिल हुई थी कि मेरा पीछा एक कार ने

किया घोडे को मैंने खूब एडी लगाई परन्तु वह भयभीत होकर वहीं चक्कर काटने लगा"

"उससे शत्रु को तुम्हें घोडे से उतारने का अवसर मिल गया भाई ने उकसाया

"हां घोडा दौड निकला"

वह तो घर पहुच चुका है फिर ?"

'तब उन्होंने मुझे पेड से जकड दिया मदद के लिए मैं चिल्लाई तो उन्होंने मेरा मुह भी बद कर दिया मेरा सास घुटने लगा"

'उन्हें भी कीमत चुकानी पडेगी" - बलदेव बडबडाया - "उन्होंने ऐसा करने का कारण भी बताया ?"

उसने कहा कि श्वेत परिवार को पहले भी चेतावनी दी गई है कि हमारे यूरेनियम के भडार खोजने की योजना में टाग न अडाएं और पुलिस का भी उनके एक मित्र के पीछे आप लोगों ने डाल रखा है इस घटना से तुम्हारे परिवार को कुछ ठोकर तो लगेगी

मैं उस गधे के बच्चे का मलीदा बना दूगा' - विद्याधर जोश में बोला

वह दुष्ट औरत तो कह रही थी कि तुम्हें यहा कोई ढूढ भी नही पाएगा और भूखों मर जाओगी"

"उन लोगों का हुलिया कैसा था ?"

"आदमी हट्टा-कट्टा मोटा चेहरा पतली ठोडी भद्दी शक्ल सुअर की सी आखें पर था कहा का कह नहीं सकती"

"और स्त्री

"लम्बी-चौडी भूरे बाल चेहरा जरा सूखा सा अब तो मैं थक गई हू, भैया चलो घर"

"अभी न्हो"

घर पहुंचते ही मां और सहेली मिलने दौडी और शान्ति लिपट गई और सारी कहानी सुन ली

"पुलिस को तुरन्त सूचना द दो वेटा !" मां ने आश्चर्य कहा

पुलिस कप्तान इस रहस्यपूर्ण घटना का व्यौरा स्वयं आक लना चाहता था तभी शान्ति हँस कर बोली -

"माता जी, मुझे वहुत भूख लगी है"

वलदेव ने घडी पर देखने हुए अनुमान लगाया कि उसं पिताजी महमान के साथ दोपहर के खाने पर अभी तक भी नह पहुच पाए उसकी मां ने फोन करने को कहा !! वास्तव विश्वनाथ भी अपने वेटे की तरह काम में व्यस्त रहने से खाना तक भी भूल जाया करता था

"हलो कुमारी तरुण"-वलदेव न फोन किया-"पिताजी है ?"

"कुछ देर पहले वे अन्तरिक्ष प्रयोगशाला की ओर गए थे' सचिव ने दफ्तर स कहा - "म पता करती हू"

फान करने पर भूमिगत प्रयोगशाला स पता लगा कि विश्वनाथ वहां नहीं है कारखाने के किसी विभाग में भी उनकी कोई खबर नहीं मिला वलदेव न फोन वद कर दिया

वटे को वाप की चिन्ता लग गई शत्रु की चेतावनी कहीं सच न हो जाए वह कार में स्वय वैठकर कारखाने की ओर ढूढने गया वहां खट-पट की आवाज आ रही थी

इधर-उधर दफ्तरों में झांकने पर विश्वनाथ का कोई पता न चला कारीगरों से पूछताछ करने के लिए वलदेव अन्तरिक्ष यान की पहली छत पर गया पर वहां वे थे नहीं सीढ़ियां चढ़ते समय उसे घडी का ध्यान हो आया

टिक-टिक की आवाज आ कहां स रही है ?"

वहां प्रकाश सा हो रहा था कोइ खास वात तो थी नहीं तव उसने एक छोटा-सा पदार्थ वहा पडा देखा वह तेजी से उसकी ओर लपका

उसका सन्देह ठीक ही था

"अरे ' यह तो टाइम वम है" वह सहसा कह उठा

11 पिता की रक्षा और असली यश

वलदेव के लिए तुरन्त कार्यवाही करनी जरूरी थी वम को लिए हुए वह तुरन्त सीढियों से नीचे दौडा क्योंकि वम डेढ़ वजे फटने वाला था

जहाज के शेड क नीचे तल के ढाल म उसने वम को डाल दिया जिससे उसमें थोडी देर के वाद वम वेकार हो जाएगा

"अरे ' यहीं कहीं से आवाज आ रही है

वह प्रयोगशाला की सीढियों से फिर उतरा ताकि शत्रु की दुष्ट चाल का पता लगा सके तभी उसने अपनी ओर आते हुए किसी को देखा

"पिताजी क्या वात है ? पिताजी को सहारा देने के विचार से कूदते हुए चिल्लाया

"उस वदमाश ने मुझे गैस सुधा दा"

"यश ' वह नकली आदमी है क्या ?"

"हा" पिता जी वोले

दफ्तर पहुचते ही वलदेव ने पिता को पर्श के नीचे लिटा दिया

"अब ठीक हू कुछ ताकत आई मेरा सौभाग्य ही था कि मैं उस बंद कमरे में से जिन्दा निकल आया हू"

"उसने गैस कब सुघाई ? अब डेढ बजा है ?"

"एक से पहले क्योंकि कर्मचारी खाने से अभी लौटे नहीं थे"

बलदेव ने पिता को बम का और उसके डेढ बजे फटने के समय का भी बताया पर इतनी जल्दी वह भाग भी गया होगा वह इधर-उधर ही छिप रहा होगा उसे सहसा ध्यान हो आया

"पिता जी हम कार्यालय तो खुला छोडकर आए थे चाबी आपके पास है न ?"

"ऊ हू" जेब टटोलते हुए पिता बोला

"बस तो यश ही इसे उडा ले गया है" -- बलदेव ने कहा "वह कार्यालय की तलाशी भी करने आया होगा"

उसने झट अलमारियों को खोला उसका सन्देह ठीक ही निकला

"द्युम्न स्कोप का नक्शा गायब है" -- बलदेव चिल्ला उठा

उसने मुख्य द्वारपाल को फोन पर पूछा कि उसने यश नाम के व्यक्ति की जाच की थी

"हा एक बीस पर । और वह बाहर जाने से पूर्व अपना कवच छोड गया था" -- द्वारपाल ने उत्तर दिया - "क्या कोई गडबड है ?"

बलदेव ने घटना का ब्यौरा दिया

"क्या यश कार द्वारा लौटा था ?"

"टैक्सी द्वारा"

"नम्बर"

"डी एल 587"

"बढिया इतना सुराग काफी है' -- बलदेव ने फोन बद

करते हुए कहा अभी पुलिस को सूचित करने जा ही रहा था कि विद्याधर ने द्वार पर दस्तक दी बलदेव ने द्वार खोला

"कप्तान साहब ! क्या आविष्कारक भूखे मरते हैं" -- उसने कहा -- "तुम्हारे माता जी तो "

बलदेव ने बात को काटते हुए कहा -- "पिताजी पर फिर वार किया गया है'

उफ ! ये जासूस लोग तो बराबर शक्ति पकडते जा रहे हैं" -- विद्याधर ने कहा -- "अब आप कैसे हैं चाचा जी ?"

"काफी ठीक हू, परन्तु सब्र तो शत्रु को कैद करवाने पर ही होगा"

बलदेव पुलिस को फोन करने जा रहा था तो विद्याधर ने बताया कि वह स्वय उस जासूस का पता लगाएगा उसने भेदिए का पूरा विवरण लिया

"साथ कारखान के कुछ संतरी ले लो" -- विश्वनाथ ने सलाह दी -- "अन्यथा तुम परेशानी में पड सकते हो"

बलदेव ने पुलिस को सूचना दी तो उसे मा की चिन्ता का ध्यान हो आया मा को उसने इस ताजी घटना की बात बताई और पिता के सकुशल होने का भी पता फोन पर दे दिया

" अब हम लोग दफ्तर में ही लंच ले लें तो अच्छा रहेगा" - बलदेव ने सुझाव दिया -- "मुख्य प्रबंधक चन्दन रसोई तैयार कर ही देगा "

चन्दन इस घटना को सुनकर उबल पडा - "श्रीमान् जी" वह भडक उठा -- "मैं तो चाहूंगा कि आप पर हमला करने वाले के सिर पर एक भारी पत्थर बांध कर हुगली से लेकर द्वारिका तक चक्कर कटवाऊं"

दोनों बाप और बेटा रसोइए की प्रचण्डता पर मुस्कराए तब

बलदेव ने उसे भोजन बनाने का आदेश दिया

इसी बीच में बलदेव ने हेमक वैज्ञानिक सभा के अध्यक्ष सेन राकेश को भी सूचना दी

इसे सुनकर वह चिल्लाया - "वह तो कोई नकली जासूस होगा हमारे दूत का तो ऐसा डील-डौल था ही नही"

अध्यक्ष को यह जानकर और भी अचम्भा हुआ कि उस भेदिए को इ' लोगों के सकेत शब्द बाशव' का भेद कैसे लगा

"वैज्ञानिक सघ के बीच में ही कोई जासूस अवश्य होगा" - अध्यक्ष चिल्लाया -- मैं सब ठीक किए देता हू"

"खैर यह बताइए कि आपने किसी को हमारे यहां भेजने के सम्बन्ध में हमें तार भेजा है ?"

"बिल्कुल" । सेन राकेश ने उत्तर दिया "हमारे यहा से श्री यश जा रहे हैं उनकी पक्की पहचान है उनकी जेब में उनके छोटे बच्चे का चित्र"

टेलीफोन रखते ही चन्दन ने द्वार खोला, ट्रे उसके हाथ में थी विश्वनाथ ने तो थोडा ही खाया परन्तु बेटा तश्तरी चट कर गया

तभी फोन की घटी हुई बलदेव ने फोन उठाया

जोशीली आवाज बोल रही थी 'एक सज्जन को द्वार पर हमने रोक रखा है जो आपसे मिलने के लिए हठ कर रहा है, परन्तु गडबड यह है कि उसी नाम से पहले भी एक व्यक्ति आ चुका है"

"श्री यश है ?"

"बिल्कुल"

"मैं स्वयं आता हू" -- बलदेव ने उत्तर दिया, "वास्तव मे पहला व्यक्ति नकली था उसे आने दो"

थोडी देर में बलदेव अतिथि कक्ष में पहुचा वहा आराम कुर्सी

पर साफ वस्त्र पहने हाथ में ब्रीफकेस लिए एक सज्जन वैठे थे

"मुझे पता लगा कि यहा किसी अन्य सज्जन द्वारा मेरा नाम लेकर आने के बारे में कुछ भ्रम-सा हो गया है" - आगन्तुक ने अपना नाम यश वताते हुए टिप्पणी की -- "मुझे खेद है कि मेरे आगमन पर ऐसी बात हो गई अव मेरा परिचय पत्र अच्छी तरह आप देख लें" उसने जेव से कुछ कागज निकाले

वलदेव ने एक दम पूछा "आपका एक छोटा वेटा भी है ?"

यश को आश्चर्य हुआ - "हां है"

"आपके पास उसका चित्र भी होगा ?"

"जी हां , अपने वेग से एक झूले पर झूलते शिशु का चित्र पकडाते हुए बोला

वलदेव मुस्कराया - "इतना प्रमाण काफी है, वह बोला" आइए, पिताजी से मिलिएगा ?"

जव वे बाहर गए तो वलदेव ने द्वारपाल को बताया कि असली श्री यश यही है उसे कवच पहनने को दिया गया और वे भूमिगत जहाजों के छप्पर मे गए वहां विश्वनाथ से भेंट करके यूरेनियम की खोज के विषय में बातचीत करने लगे साथ ही यह कि वरुण देश से पृथक हो रहे राज्य के विद्रोही कहीं उस भण्डार को न हथिया लें

"ऐसा हुआ तो मेरे देश वाशव के लिए अत्यन्त शर्म का विषय होगा" - उसने कहा हमारा विदेशों के साथ भी--

अभी वे बातें कर ही रहे थे कि वीच में ही फोन आ जाने से वाक्य अधूरा ही रह गया।

"मैं वलदेव वोल रहा हूँ" उसने कहा

"मैं इधर विद्याधर हूं" -- उस जाली जासूस को लाने वाले ड्राइवर का पता निकाल लिया है उस भेदिए को वह ड्राइवर

उसके अपने जहाज तक पहुचाने गया था भेदिया अभी-अभी अपने पोत से उडा है सम्भवत वह आपके कारखाने के ऊपर से गुजरेगा"

"मैं भी पीछा करना हूं", बलदेव ने फोन रखते हुए बताया

अपने पिता और यश को उसने विद्याधर का स देश पहुँचा दिया और कहा -- "मैं भी आपसे बराबर सम्पर्क बनाए रखूँगा"

"चीफ इजीनियर हृदयनाथ को भी संग ले लो", विश्वनाथ ने आग्रह किया - "तुम लोगों को मदद की जरूरत पडेगी"

कुछ ही क्षणों बाद बलदेव एक तेज पोत को ले उडा

"उडान करते समय पूर्व तथा पश्चिम में निगाह बराबर रखना" -- विश्वनाथ ने हृदय नाथ को सावधान किया

थोडी देर तक वे पूरी गति से चुप-चाप उडे सामने का जहाज नजर आया तभी उसने अपना जहाज पीछे लगा दिया सामने आकाश की ओर देखते हुए हृदयनाथ अचानक चौंक पडा

"वहा दूर कुछ दिखाई दे रहा है"

"वह शायद उतरना चाहता है" - बलदेव ने कहा, "परन्तु इधर हवाई अड्डा तो है नहीं"

अगले ही क्षण शत्रु का जहाज पेडों के पीछे गोता लगाकर छिप गया बलदव ने उसे एक मरुभूमि के छोर पर छप्पर के बीच में उतरते देखा साथ ही एक फार्म था बलदेव ने आश्चर्य से कहा, "अरे, यहां एक पुराना हवाई अड्डा था" ।

उस चरागाह का चक्कर काटकर बलदेव ने भी अपना जहाज धीरे से नीचे उतारा

"हमें छिपने की जरूरत नहीं" अपने साथियों से बलदेव ने कहा -- "बल्कि हमें हर स्थिति के लिए तैयार रहना चाहिए"

जहाज के ठहरते ही हृदयनाथ ने बाहर कूद कर पायलट की

पर साफ वस्त्र पहने हाथ में ब्रीफकेस लिए एक सज्जन बैठे थे

"मुझे पता लगा कि यहा किसी अन्य सज्जन द्वारा मेरा नाम लेकर आने के बारे में कुछ भ्रम-सा हो गया है" - आगन्तुक ने अपना नाम यश बताते हुए टिप्पणी की -- "मुझे खेद है कि मेरे आगमन पर ऐसी बात हो गई अब मेरा परिचय पत्र अच्छी तरह आप देख लें" उसने जेब से कुछ कागज निकाले

बलदेव ने एक दम पूछा "आपका एक छोटा बेटा भी है ?"

यश को आश्चर्य हुआ - "हां है"

"आपके पास उसका चित्र भी होगा ?"

'जी हां", अपने बेग से एक झूले पर झूलते शिशु का चित्र पकड़ाते हुए बोला

बलदेव मुस्कराया - "इतना प्रमाण काफी है वह बोला" आइए पिताजी से मिलिएगा ?"

जब वे बाहर गए तो बलदेव ने द्वारपाल को बताया कि असली श्री यश यही है उसे कवच पहनने को दिया गया और वे भूमिगत जहाजों के छप्पर में गए वहां विश्वनाथ से भेंट करके यूरेनियम की खोज के विषय में बातचीत करने लगे साथ ही यह कि वरुण देश से पृथक हो रहे राज्य के विद्रोही कहीं उस भण्डार को न हथिया लें

"ऐसा हुआ तो मेरे देश वाशव के लिए अत्यन्त शर्म का विषय होगा" - उसने कहा हमारा विदेशों के साथ भी--

अभी वे बातें कर ही रहे थे कि बीच में ही फोन आ जाने से वाक्य अधूरा ही रह गया।

"मैं बलदेव बोल रहा हूँ" उसने कहा

"मैं इधर विद्याधर हू" -- उस जाली जासूस को लाने वाले ड्राइवर का पता निकाल लिया है उस भेदिए को वह ड्राइवर

उसके अपने जहाज तक पहुचाने गया था भेदिया अभी-अभी अपने पोत से उडा है सम्भवत वह आपके कारखाने के ऊपर से गुजरेगा"

"मैं भी पीछा करता हू", बलदेव ने फोन रखते हुए बताया

अपने पिता और यश को उसने विद्याधर का स देश पहुँचा दिया और कहा -- "मैं भी आपसे बराबर सम्पर्क बनाए रखूँगा"

"चीफ इजीनियर हृदयनाथ को भी सग ले लो", विश्वनाथ ने आग्रह किया - "तुम लोगों को मदद की जरूरत पडेगी"

कुछ ही क्षणों बाद बलदेव एक तेज पोत का ले उडा

"उडान करते समय पूर्व तथा पश्चिम में निगाह बराबर रखना" -- विश्वनाथ ने हृदय नाथ को सावधान किया

थोडी देर तक वे पूरी गति से चुप-चाप उडे सामने का जहाज नजर आया तभी उसने अपना जहाज पीछे लगा दिया सामने आकाश की ओर देखते हुए हृदयनाथ अचानक चौंक पडा

"वहा दूर कुछ दिखाई दे रहा है"

"वह शायद उतरना चाहता है" - बलदेव ने कहा, "परन्तु इधर हवाई अड्डा तो है नही

अगले ही क्षण शत्रु का जहाज पेडों के पीछे गोता लगाकर छिप गया बलदेव ने उस एक मरुभूमि के छोर पर छप्पर के बीच में उतरते देखा साथ ही एक फार्म था बलदेव ने आश्चर्य से कहा, "अरे यहा एक पुराना हवाई अड्डा था" ।

उस चरागाह का चक्कर काटकर बलदेव ने भी अपना जहाज धीरे से नीचे उतारा

"हमें छिपने की जरूरत नहीं" अपने साथियों से बलदेव ने कहा -- "बल्कि हमें हर स्थिति के लिए तैयार रहना चाहिए"

जहाज के ठहरते ही हृदयनाथ ने बाहर कूद कर पायलट की

सीट के नीचे दो यन्त्रों को चालू कर दिया वे वास्तव में सूचना भेजने और प्राप्त करने के यन्त्र थे जो कि वलदेव द्वारा स्वय आविष्कृत थे उनके द्वारा उसने घर से तथा कारखाने से सम्पर्क जोड रखा था

"तुम्हारे पिताजी को यदि कुछ गडवड लगे तो वे तुरन्त मदद भेज सकें -- यही आशय है न इन यन्त्रों का" ?

"बिल्कुल -- वलदेव ने पुष्टि की

वे दानों शत्रु के हवाइ जहाज की दिशा में आगे बढे वहा कोइ नही था छप्पर का द्वार वन्द था हृदयनाथ ने द्वार खोलने का प्रयत्न किया

ताला लग रहा है

खोलो --उसन आदेश दिया "हमें पता है तुम अन्दर हो"

यही तो तुम्हारी भूल है -- एक शान्त आवाज ने कहा जवकि चार सशस्त्र व्यक्तियों ने उनका घेरा डाल लिया

12 वलदेव व विद्याधर फदे में

ऐसी स्थिति में सशस्त्र शत्रु का मुकावला कैसे हो सकता था ? झडप हो गई परन्तु इन तीनों के हाथ मजवूती से जकड दिए गए

"गडवड की तो खवरदार" एक ने कहा

"गडवड क्या करेंगे ? इन्हें हम मौका ही नहीं देंगे" -- दूसरे ने उत्तर दिया -- "इनकी तो जकड ही अनोखी होगी"

वलदेव को तो पूर्ण विश्वास था कि वे लोग पृथक् हो रहे वरुण प्रदश के विद्रोही थे भयानक चेहरे तो उनके थे ही

"हम इन्हें कप्तान को सौंप देते हैं" -- इन्हें पक्की तरह जकड़ने के बाद एक ने आदेश दिया - "वह इन्हें पाकर खूब खुश होगा"

"हमें कहां ले जाओगे" ? बलदेव ने रोब से पूछा

उत्तर की जगह उन्हें धक्के मिले उन्हें फार्म की ओर ले जाया गया बड़े भवन में से एक कमरे में वे लोग पहुंचे एक युवक एक कुर्सी पर बैठा आराम से तम्बाकू पी रहा था

"कप्तान कन्हैया ! आपके कुछ मेहमान आए हैं" -- उनमें से एक बोला -- "उनके स्वागत के लिए आप तैयार हैं न ?

कप्तान नकली यश तो नहीं था जैसा कि बलदेव को आशा थी, परन्तु इसी ने उसे कारखाने में पछाड़ा जरूर था वह वही भेदिया था जो वैज्ञानिक अधिवेशन में भी नकली जासूस बना था

"खूब भेंट हुई दोबारा ! बलदेव दोस्त" - कप्तान ने घृणापूर्ण हंसी हसते हुए कहा - "तुम तो हमारे पायलट से जो नकली यश बनकर गया था उसे मिलने की आशा में होगे ? वह तो गया अब उसकी जगह तुम नए मित्र आ गए हो, धीरे-धीरे हमारा विशेष परिचय हो जाए" -- उसने ताना दिया

"तुम्हारा इरादा क्या है ?" बलदेव ने पूछा

"अपनी योजना की बात को फिर करता हूँ पहले तुम यह बात अच्छी तरह समझ लो कि वैज्ञानिक कप्तान कन्हैया के साथ तुमको भड़ना नहीं, ठीक है ?"

"तुम धूर्त हो" - बलदेव ने उत्तर दिया "तुम्ही ने तो हमारी हवाई पटटी पर उतर कर रेडार का वाल्व बन्द किया था"

कन्हैया को सनोषजनक हंसी छूट गई -- "हा मेरे पास अपना मतलब पूरा करने के अन्य साधन भी है मैं तुम्हे कुछ समय तक बधक के रूप में भी रखूंगा"

कप्तान का साथी मुस्कराया -- "कप्तान साहब बहुत चतुर है" वह बोला -- "कप्तान कन्हैया तथा मैं दोनों ही वापिस लौटने पर पुरस्कार पायेंगे"

कप्तान ने जोर से मेज पर हाथ पटका

"बस।" वह गरजा "तुम इनको आगे सब कुछ बता दोगे"

कप्तान का साथी मेघनाद एकदम चुप हो गया कन्हैया बलदेव को सम्बोधित करके बोला -- "मैंने तुम्हारे पिता को पत्र लिखा है इसके नीचे तुम अपने हस्ताक्षर करोगे"

"वह क्या ? हमारे बदले में फिरौती चाहते हो ?"

कप्तान ने कटाक्ष किया "तुम्हारी फिरौती के लिए तो तुम्हारी प्रयोगशाला भेंट में लूगा जिसके लिए तुम मदद करोगे"

"क्या ?"

विद्याधर को सुनते ही धक्का लगा दोनों विस्मित होकर उस विद्रोही नेता की मागों को सुनने लगे

"जो कुछ कह दिया है यदि प्रसिद्ध वैज्ञानिक विश्वनाथ अपने बेटे को जिन्दा देखना चाहता है तो अपने अन्तरिक्ष यान को दोनों प्रदेशों की सीमा पर किसी स्थान पर छोड दे और वापिस लौट जाए मैं इसे स्वय उडा ले जाऊगा"

"तुम्हारे बस का उसे चलाना कहा है ?" विद्याधर बोल उठा -- "तुम उसका गलत लीवर उत्तालक दबाकर अपने आपको ही उडा लोगे"

कन्हैया ने त्यौरी चढाई "सीमा पार सिखलाई के लिए वैज्ञानिक बलदेव को भी तो ले जाया जा सकता है"

"तुम्हारे ऐसे पागलों वाले प्रस्ताव को तुम्हारे ख्याल में क्या मेरे पिताजी स्वीकार कर लेगें ?"

दुष्ट कप्तान अजीब हसी हस कर बोला, "लो पढो इस पत्र

को", और बलदेव को पत्र दिखाया पत्र इस प्रकार था--

"श्री विश्वनाथ यदि आप अपने बेटे को फिर देखना चाहते हैं तो अपने अन्तरिक्ष यान को मेरे हवाले कर दीजिए शीघ्र ही समय और स्थान के विषय में सूचना मिल जाएगी इस सूचना को पूरी तरह गुप्त रखना" -- 'यान्हैक'

"यान्हैक !" बलदेव ने नाम को दोहराया, वह समझ गया कि यह यान्हैक नाम कन्हैया का उल्टा है

अब क्या हो ? वह असमजस में पड गया हस्ताक्षर कर देने पर पिता को उसके जाल में फसने का पता लग जाएगा

इन अपराधियों के इरादे को निष्फल कैसे करें ? सोचते-सोचते उसे ध्यान आया कि कुछ ही दिन पूर्व परस्पर बातचीत में बाप-बेटे ने कष्ट पडने पर एक योजना बनाई थी उसी का ही प्रयोग क्यों न करें

"ठीक है मेरे हाथ खोल दो" बलदेव ने कहा

ऐसा ही किया गया उसने पेन से हस्ताक्षर करके अपने नाम के अन्तिम अक्षर 'व' को काट दिया उसका अर्थ यह था कि बलदेव के प्राण सकट में हैं परन्तु सम्भवत स्वय ही सकट से सुलझ सकता है पिता को प्रतीक्षा करने का अवसर इससे मिल जाएगा तभी उसके हाथ पुन बांध दिए गए

"तुम कुछ समझदार बन रहे हो" - कन्हैया विजयपूर्ण हंसी से बोला -- "हमारे साथ मिल जाओ तुम्हारा कुछ नही बिगडेगा अरे दोस्त ! ये रंगीन पैंसिलें कैसी हैं" बलदेव की ओर गौर से देखते हुए बोला

"नक्शों के लिए मुझे रंगीन पैंसिलों की जरूरत पडती है "

"मैं इन्हें जरा देखूं"

विवश बलदेव चुपचाप देखता रहा जब कि कप्तान ने पीली

पैंसिल जिसमें लघु रेडियो लगा था देखी कप्तान उसमें लगे गुप्त बटन को दबा नहीं सकेगा ऐसी उसे आशा थी सरसरी निगाह डाल कर कप्तान ने दूसरी पैंसिल पकडी

अपनी गुप्त भाषा में कप्तान ने उन कैदियों को दफ्तर में बद रखने का आदेश दिया और पत्र भिजवाने का प्रबन्ध करने चला गया ये दोनों कैदी उनकी भाषा से अनभिज्ञ होने का बहाना कर रहे थे यद्यपि वे उसकी भाषा खूब समझ सकते थे

"उनके पाव भी पक्की तरह बाध देना" -- मेघनाद को कप्तान ने आदेश दिया--"एक-एक संतरी द्वार तथा खिडकी पर बिठा दो"

"चिन्ता नहीं कीजिए कप्तान साहब"

मेघनाद ने उन दोनों के पाव भी अच्छी तरह जकड दिए इतने ज्यादा कि चमडी को भी काटने लगे उन दोनों को कमरे में एक दूसरे से उल्टी दिशा में बिठा कर मेघनाद ने द्वार बद कर दिया

"अच्छा रहा कि उन्होंने हमारे मुह बद नहीं किए"-- विद्याधर फुसफुसाया--"चिल्लाने से भी कोई लाभ नहीं मुझे जानकर बडा दुख है कि वे तुम्हारे पिताजी से बडे जहाज को छीन लेंगे"

"अरे मैंने भी तो चाल चली है हम स्वय भी छूट सकते है

"कैसे ?" विद्याधर ने धीरे से पूछा

"मेरी जेब में लाल पैंसिल छोटी-छोटी चीजों को टाकने वाला लोहा है पीछे हटकर देखो यदि उसे निकाल सको तो"

इजीनियर विद्याधर उसके पास पहुँचा और स्वय जकडे होने पर भी वह सफल हो गया

"यह लो, अब ?"

"पीठ से पीठ जोडो और बटन दबाओ" -- बलदेव फुसफुसाया

विद्याधर ने ऐसा ही किया, बलदेव के बधन जलने ही लगे थे कि द्वार की जाली की आवाज आई दोनों झट से पहली अवस्था में बैठ गए

मेघनाद ने झाककर उन्हें पहले जैसा पाकर दात निपोडे

"हमारी राह का रोडा वैज्ञानिक खूब फँसा" काव-काव करते हुए उसने दरवाजा बद कर दिया

"दूसरे व्यक्ति के आन तक तो मैं भाग चुका हूगा -- विद्याधर धीरे से बोला

बलदेव ने सूघा फर्श की लकडी जली थी

"बस तो इसमे हमारा काम अभी हो जाएगा" -- विद्याधर ने कहा

दोनों ने फिर से पाठ से पीठ मिलाई और उस यन्त्र से क्षण भर में ही रस्सो की एक-एक रस्सी जला दी गई पहले बलदेव के हाथ मुक्त हुए फिर दोनों ने हाथ-पाव छुडवा लिए

"वाह ! कितना आराम मिला है" विद्याधर ने लम्बा सास लिया "अब इन रस्सों को पास ही रखें ताकि उन्हें शक न हो"

"बिल्कुल, और शाम तक हम प्रतीक्षा करें" -- बलदव बाला -- "पर जब हम खाना खायेंगे तो खाते समय भेद खुल जाएगा

"उन्हें कहेंगे कि खाना छोड जाए -- बलदेव ने उत्तर दिया "पर मेरे ख्याल से तो उन्हें हमारे खाने का भी याद नहीं होगा

"मुझे तो उनकी रसोई में शोर होने का आभास हो रहा है"

शोर बढता गया स्पष्ट था कि वे जश्न मना रहे थे वे हिन्दी तथा अपनी गुप्त भाषा का प्रयोग कर रहे थे

एक घन्टे के बाद शोर बंद हो गया और उनके खर्राटे भरने की आवाज सुनाई पडने लगी

"अभी मौका है" -- विद्याधर से बलदेव ने कहा

"खिडकी के वाहर तो सतरी खडा है" -- विद्याधर ने पूछा

"मैं गुप्त यन्त्र द्वारा पता लगाता हूँ नीली पैंसिल की तरह है न वह" वलदेव ने जेब से लाल पैंसिल को निकाला और अधेरे में उसका वटन दवाकर किरण फेंकी उसमे खिडकी के आग एक भयानक सतरी की शक्ल नजर आई -- "वह शायद खाने के लिए जा रहा है" -- वह वोला - अव मौका है

धीरे से विना सरियां वाली खिडकी का किवाड ऊपर कर व दोनो पार हो गए और वलदेव के अपने पोत की ओर वढे

तभी शान्ति का भग करती हुई ऊपर से गूज सुनाई पडी एक हलीकॉप्टर ठीक उनके ऊपर उतर रहा था

उसमें कन्हैया तथा उसका साथी पायलट था

13 प्रयागशाला की उडान

अव वे करें तो क्या करं छिपन की जगह नही ऊपर से उतरते समय प्रकाश पडते ही वे नजर आ जाएगे

'ध्यान दो हृदयनाथ अचानक वोल उठा, वह हमारा चार सीटों वाला हेलीकॉप्टर प्रतीत होता है"

"विल्कुल उसी की आवाज है वलदेव ने स्वीकार किया "अभी पता लगाते हैं" चीफ इजीनियर द्वारा वताए हुए गुप्त शब्द द्वारा वलदेव ने सदेश भेजा -- "आप कौन हैं ?"

उस छोटी पैंसिल द्वारा उन्हें नीचे उत्तर मिला विद्याधर ऊपर से वोल उठा - "तुम्हारे पिताजी मेरे साथ हैं तुम वलदेव वोल रहे हो न तुम हो किस जगह ?"

"ठीक तुम्हारे नीचे जगह साफ है शीघ्र उतर आओ"

"मैं अपने पोत से ईंधन छोडता हूँ - हृदयनाथ ने आश्वासन दिया - "जिससे हमारा पीछा कोई नहीं कर सकेगा"

"बढ़िया विचार है -- बलदेव बोला और उसने हेलीकॉप्टर को सुरक्षित स्थान पर उतरने का निर्देश दिया उधर हृदयनाथ ने ईंधन के टैंक को खोल दिया और हेलीकॉप्टर के पास पहुँच गया

"जल्दी से उड चलो" - बलदेव ने आग्रह किया

अभी वे दोनों यान में बैठे ही थे कि नीचे से गोला-बारी शुरू हो गई

"अब हम शत्रु की मार से बाहर हैं प्रभु का शुक्र है" -- बलदेव ने आराम की सास ली

"तुम्हारे ठीक-ठाक होने की मुझे बहुत खुशी है' -- विश्वनाथ ने कहा -- तुम्हारा सन्देश वाहक य काम कर गया"

"हमारे अपहरणकर्ता का पत्र भी पिताजी, क्या आपको मिला था"? -- बलदेव ने पूछा

"हां तभी तो विद्याधर को मैंने पकडा उन गुण्डों को जित‍ी जल्दी कानूनी गिरफ्त में लाया जाए उतना ही अच्छा है"

बलदेव ने पुलिस कप्तान राक्षी को फोन पर सारी घटना कह सुनाई

"कन्हैया' ' पुलिस अधिकारी चिल्लाया -- "वह तो कुख्यात अपराधी है और विद्रोही वैज्ञानिक भी तुम उससे भी अधिक चतुर निकले हो फिर कभी उसके चंगुल में न फस जाना"

पुलिस कप्तान ने राजकीय सैन्कि कार तथा हेलीकॉप्टर द्वारा तुरन्त सहायता भेजने का वचन दिया सडकें खराब होने पर भी तथा वहां पोत का उतरना असुरक्षित होने पर भी अपहरणकर्ताओं के भाग सकने स पहले ही पुलिस के वहां पहुँच

जाने का आश्वासन दिया

इसी दौरान में विद्याधर ने श्वेत परिवार के बाप-बेटे के पोत का उनके कारखाने तक पूरा-पूरा मार्ग दर्शन ही किया

अगली प्रात फोन की घटी हुई बलदेव का फान था

"पुलिस मुख्यालय से कप्तान राक्षी बोल रहा हूँ - गत रात्रि तक तो कोई सुराग नहीं मिला उसने सूचना दी

अपहरणकर्ता पुलिस दल के पहुचने से पूर्व अपने यान द्वारा भाग चुके थे एक बुरी सूचना और भी है कि उन्होंने तुम्हारे हेलीकॉप्टर को जला डाला है

"जला दिया ।"

"हमें तो जला हुआ भाग ही हाथ लगा"

"चुरा ले जाने की अपेक्षा जला देना ठीक रहा" -- बलदेव ने कहा

बाप-बेटे के घर छोडन से पूर्व साथी पायलट हरीश टैक्सी में वहा पहुँच गया उसने अपने को अन्तरिक्षयान की जाच क लिए तैयार घोषित कर दिया उसने दोना को कई विचित्र सूचनाएं भी दी

"मुझे अभी-अभी सूचना मिली है कि जिस व्यक्ति को मैं ढूढ रहा हूँ वह वायुसेना का भगोडा है उसने अपना नाम-धाम जाली बता रखा है नाम उसका कमलेश है वह पृथक राज्य वरुण देश के विद्रोहियों स जा मिला है"

"क्या ।" बलदेव ने हैरान होकर पूछा -- "वही तो उस दल में स है जो हमें तंग कर रहा है" पिता के सकेत पर उसने हृदयनाथ को अपनी योजना का ब्योरा दिया कि उस गिरोह को कैसे मात दी जाए

विश्वनाथ ने बताया कि "विद्रोहियों द्वारा उनक नेता काफी धन

ऐंठते हैं और अपनी योजना की सफलता के लिए जानकारी भी प्राप्त करते है शक था कि उन लोगों ने हेमक वैज्ञानिक सगठन के कुछ प्रमुख वैज्ञानिकों को पकड रखा है तथा उनसे महत्वपूर्ण जानकारी बरबस प्राप्त कर लेते है तथा उनके परिवारों को धमकिया देते हैं"

"यह तो बहुत खराब स्थिति है" -- साथी पायलट हरीश ने स्वीका किया "हा यदि मैं अपने चाचा श्याम जी को मना लू तो मुझे आप साथ ले चलेंगे वरुण प्रदेश के लिए"

"जरूर" -- विश्वनाथ ने उत्तर दिया "अब अन्तरिक्षयान की पूर्व जाच का क्या करना ?"

आधे घंटे बाद वे उस विशालकाय जहाज के पास पहुचे तो बलदेव ने प्रयोगशाला को खोला हरीश तो हैरान रह गया, वे भिन्न-भिन्न हिस्सों को देखते गए तब वह बोल उठा, "कमाल है! मैंने तो आज तक ऐसा आविष्कार देखा नहीं"

"ठीक कहते हो नहीं देखा होगा" -- पीछे से एक आवाज आयी और चन्दन भी वहीं पर आ धमका बलदेव ने उसका भी परिचय दिया "इस पुरानी प्रयोगशाला में तो ससार की सभी शीशियों से भी अधिक शीशियां का भण्डार रखा है किसी भी प्रकार की शीशी इनमें ढूढ लो"--प्रयागशाला को देखकर उसने कहा

"क्या श्री हरीश को रोशनी भी दिखाई जाए ? चन्दन ने बचपने ढग से चुटकी ली

"क्यों नही ? जरूर"

चन्दन उन्हें प्रकाश देने वाले यन्त्र बराबर दिखाता हुआ चला गया दोनों बाप-बेटे को बडा अचम्भा हुआ कि रसोइया चन्दन

इन्जीनियरी के सम्बन्ध में गुप्त बातों को थोडे समय में ही जान गया है

छोटे से बल्ब की ओर सकेत करके वह कहने लगा -- "यह छोटा सा बल्ब ही एक अनोखा आविष्कार है" -- बलदेव ने भी कहा कि यह इसके पिताजी का ऐसा आविष्कार है जिसका प्रकाश विशेष शीशों से ही देखा जा सकता है

"और यह क्या चीज है ?" हरीश ने एक और आविष्कार की ओर इशारा किया

"यह है श्वेत स्पेक्ट्रोग्राफ" -- बलदेव ने अभिमान से कहा -- "आख पलकने से भी पहले यह यन्त्र हरेक धातु का पता लगा सकता है जो धरती में छिपी हो"

"वाह ! मैं तो ऐसे अद्भुत यन्त्र के लिए केवल धन्यवाद ही दे सकता हू हरीश ने बलदेव का हाथ पकडा -- "मैं तो कहूगा कि वैज्ञानिक का स्वप्न साकार हुआ है"

श्वेत प्रयागशाला में चारों ओर खुशी की लहर दौड गई कि दैत्याकार सा अन्तरिक्ष प्रयोगशाला प्रात प्रथम उडान भरने जा रही है बलदेव तथा विश्वनाथ अपने साथी हरीश और विद्याधर से मिले तथा अन्य कई इन्जीनियरों त ा कारीगरों से भी भेंट की

अन्तिम जाच के साथ ही बलदेव ने भूमिगत दीवार में लगे एक बटन को दबाया जिससे इसके दो भाग हो गए और बडे यत्रों द्वारा ढाचे के दो बडे-बडों को उठा दिया गया

"लिफ्ट लगा दी जाए ! -- बलदेव ने एक इन्जीनियर को बोला

एक बडी लिफ्ट ने प्रयोगशाला के फर्श को धीरे-धीरे ऊचा उठाया धरती के बराबर ऊपर प्रयोगशाला को छोड दिया तब चार बडे-बडे ट्रैक्टर उसे हवाई अड्डे पर खींच कर ले गए.

'क्या भव्य प्रतीत होती है ? हरीश ने हैरान होकर कहा

हवाई अड्डे पर उसे विशेष स्थान पर ठहराया गया आधी मील का टुकडा तो विशेष ईंटों से बनाया गया था ताकि अणु चालित यन्त्रों के धमाके को धरती सहन कर ले

दर्शकों की भीड खुशी के मारे झूम उठी और सभी लोगों ने उचित दूरी पर स्थान लिया हरीश सहचालक बना विद्याधर उनके पीछे खडा हुआ विश्वनाथ ने पीछे ठहरकर उडान की विभिन्न यन्त्रों पर प्रतिक्रिया को देखने का निर्णय लिया प्रत्यके ने अपने-अपने फोन को सभाल लिया ताकि बलदेव अपने काम को पूरा ध्यान दे सके

"चन्दन तुम रसोई में ही हो न ?" विद्याधर ने पूछा

"बिल्कुल ! मेरा तो पूछो मत"

उडान भरने से पहले बलदेव ने उठाने वाले यन्त्रों की ध्वनि को मन्द करने का उपकरण चालू किया तब उसने अणु शक्ति के यत्रों की चाबी घुमाई अब बडे जोर की गर्ज हुई और अन्तरिक्ष यान धरती से ऊपर उठने लगा, क्षणों में ही वह आकश से बातें करने लगा

"वाह ! अब तो हम हवा में उड रहे हैं" -- विद्याधर जोश से चिल्लाया -- "अरे भाई ! हमने अपनी पुरानी धरती को इतना जल्दी छोड दिया है ?"

दो हजार फुट ऊचे पहुचकर बलदेव ने गति को धीमा किया और यान लगभग खडा हो गया

"बिल्कुल बेटा !" फोन पर उत्तर मिला -- "तुम्हारी ईजाद वैज्ञानिक क्षेत्र में एक भारी कदम है"

"नीचे आपकी प्रयोग के यन्त्र कैसे काम कर रहे है"

"बहुत बढिया बेटा वे आशातीत काम कर रहे हैं"

हरीश ने वलदेव को थपकी दी "खूब यह तो हमारे देश की रक्षा के लिए भारी वरदान होगा" उसने टिप्पणी की

विद्याधर आगे को झुका, "मुझे तुम्हारी इतनी भारी सफलता की आशा तो नहीं थी वलदेव यह अन्तरिक्ष यान तो नक्षत्रों से केवल वस एक कदम ही इस ओर रहेगा"

'नक्षत्रों की वात अभी नहीं" -- वलदेव मुस्कराया 'पहले वरुण देश की सोचो"

विद्याधर धरती पर से हृदयनाथ मुख्य इजीनियर का फोन सुन रहा था उसका स देश इस प्रकार था--

'तुम्हारी सफलता पर लोगों को सहज विश्वास नहीं हो रहा"- उसने कहा "मित्र जानते हो तुमने तो नीचे का सारा यातायात रोक रखा है लोगों का ध्यान तो तुम्हारी ओर ही लगा हुआ है"

वलदेव मुस्कराया -- "क्षणभर में हम भीड को दूसरा प्रदर्शन दिखाने जा रहे है'

अन्तरिक्षयान के सभी भागों का काम सन्तोष जनक पाकर वलदेव ने उसे आगे वढाया विद्याधर यह गति देखते ही दंग रह गया एक घण्टे में एक हजार मील

' कितना महान दिन है" वह चिल्लाया -- "तुम तो सूर्यास्त से पूर्व धरती का पूरा चक्कर काट सकते हो"

"हल्का कर दो" साथी पायलट हरीश वोला -- "अभी तो इसका परीक्षण ही है"

"ठीक है"

"जरा ऊंचा ले जाओ कहीं शत्रु न भाप ले"

"वहुत अच्छा"

नीचे खडी भीड को जहाज उल्कापात की तरह लगा यन्त्रों ने

तीस सैकिंड में नेत्रों से ओझल कर दिया

"और ऊपर नहीं" -- चन्दन रसोई में से चिल्लाने लगा-- "भैया मेरे पास मंगलग्रह की यात्रा के लिए भोजन नहीं है"

"तो हम चाद पर उतर कर खाद्य-सामग्री ले लेंगे" -- विद्याधर बोला

ऊंचाई मापक यन्त्रक ने पचास हजार फुट ऊंचाई बताई तब यान नीचे की और उतरने लगा

बलदेव ने यन्त्रों की ओर देखकर जहाज को खतरे में पाया

"क्या बात है ?" विश्वनाथ ने तुरन्त प्रयोगशाला से पूछा

"जहाज को उठाने वाले यन्त्र फुक रहे हैं" बलदेव ने बताया-- "मेरे विचार मे वे जहाज की गर्मी मे पिघल रहे प्रतीत होते हैं"

"उसने एक दम नीचे को जहाज का मुँह कर दिया

"ठीक है" -- पिता ने चेतावनी दी, "खतरा मोल लेने की जरूरत नहीं सभी लोग सुरक्षा पेटियां कस लो"

"क्या तुम्हारी हवाई पट्टी इतनी बडी है कि इतना बडा जहाज अपने अड्डे पर उतार सकें" ? हरीश न त्यौरी चढाई

इतने भारी जहाज के लिए तो इसका नक्शा बना ही नहीं था, परन्तु उसने विद्याधर को सदेश दिया कि हृदयनाथ को सूचना दें कि "हवाई पट्टी को तैयार कर दो जहाज को विवश होकर उतरना पड रहा है"

विश्वनाथ प्रयोगशाला से बाहर बेटे की इस खतरनाक चाल को देखने के लिए निकला "क्या तुम इसे सुरक्षित उतार सकोगे?" उसने बेटे को पूछा

"आशा तो करता हूँ पिताजी" । -- वह बोला -- "एकदम लट्टू की तरह इसे घूमकर देखता हूँ"

हरेक का मुँह खुला रह गया, न-जाने अगले क्षण क्या हो जाएगा बलदेव ने जहाज का जोर का चक्कर दिया कारखाने के मैदान में जब वह उतरने लगा तो पायलट ने बड़े आराम से उसके पहिए धरती पर टिका दिए

सभी यन्त्रों को बन्द कर दिया गया, जहाज पहियों पर आराम से चलता गया, पर बिना टक्कर खाए उतनी छोटी जगह पर टिक पाएगा, यह कल्पना से बाहर की बात थी

14 अन्तरिक्ष यान की परीक्षा

"एक दम मोड़ देने के सिवाए कोई चारा ही नहीं बचने का", बलदेव फुसफुसाया हवाई पट्टी तो छोटी है ही इस विशाल मशीन के लिए

आगे बड़ी दीवार थी, दाईं ओर के इंजन को उसने गति दी अभी जहाज रुका नहीं था पायलट ने अब ऐसी ब्रेक लगाई कि वह भारी जहाज एकदम ठहर गया

सभी लोग सांस रोके खड़े थे साथी पायलट हरीश ने बलदेव के कन्धों पर हाथ रखते हुए कहा कि "दोस्त ! ऐसी बढ़िया उड़ान आज तक केवल तुम्हारी ही देखी है

विद्याधर भी आगे झुका "मित्र ! यह तो एक अनोखा ही कौशल था मेरे ख्याल में यदि कोई सन्देह था भी तो अब जाता रहा है"

"धन्यवाद ! आपके आशीर्वाद का" बलदेव ने नम्र भाव से उत्तर दिया "भला चन्दन तो ठीक-ठाक है न ?"

अभी वे अपने कक्ष से निकले ही थे कि चन्दन से टकराव हो

गया उसका रंग पीला था और वह कांप रहा था दूसरों को ठीक पाकर उसे भी तसल्ली हुई "मैं अपने को पुन धरती पर पाकर बहुत प्रसन्न हूँ" -- वह बोला

हृदयनाथ भी तभी अपने मित्रों के साथ पहुंच गया

"प्रभु का शुक्र है सब सुरक्षित हैं , वह बोला - "किसी को चोट तो नहीं आई है ?"

बलदेव ने आश्वासन दिया कि जहाज का ढांचा हर तरह की परेशानी को सह सकने के लिए सक्षम था

"तो भी मैं इसकी पूरी जांच करवाना चाहूंगा"-- तब उसने बताया कि उसके उत्थापक (उधर उठाने वाले यन्त्र) जल चुके थे

"हमें अधिक गर्मी को सहने वाली धातु से बने हुए नए उत्थापक चाहिए आपको कुछ ध्यान है कि पिता जी ?'

"ऊंड पाव तो उत्थापकों (ऊपर उठाने वाले यन्त्रों का) प्रबन्ध हो नहीं सकता" विश्वनाथ ने उत्तर दिया, "तो इस समस्या पर विशेष ध्यान दिया जाएगा"

थोड़ी देर बाद बलदेव अपने पिता से मिला तो उसने बताया कि अभी समस्या का हल तो हो नहीं सका क्योंकि उसे डी सी उपायुक्त से मिलने जाना है, अधिकारियों का विश्वास है कि विद्रोही राज्य में वातावरण शान्त करने के लिए उसकी राय से उन्हें बहुत लाभ होगा

विश्वनाथ ने यह भी कहा कि उसे वहां की स्थिति का पूर्णज्ञान तो नहीं है नहीं तो स्थिति को सुधारने में राय दे सकता है

"मैंने तो वहां के संसद सदस्य को बताया था कि मैं कोई राजनीतिज्ञ तो हूं नहीं मैं तो एक वैज्ञानिक हूं तो भी उन लोगों ने मुझे सम्मेलन में शामिल होने का आग्रह किया है

"तो आप कब जा रहे हैं", पिता जी ।"

"अभी",

"तब वरुण देश के दौरे का क्या रहेगा ?"

पिता मुस्कराया, 'वहां भी चलेंगे जब तुम्हारे उत्थापक तैयार हो जाएंगे गर्मी रोकने वाली धातु को ढूढ निकालने का तुम्हारा प्रयोग कैसा होगा ?"

"अब उसी समस्या के हल में लग रहा हू"

बलदेव ने अनेकों धातुओं और मिश्रणों से उत्थापकों के निर्माण में दिन-रात एक कर दिया परन्तु पहले उत्थापकों से बढिया न बन सके

आखिर थक कर एक रात को बलदेव सो गया, परन्तु सूर्योदय से पूर्व ही उसे सहसा ध्यान आया और वह बिस्तर से एकदम कूद पडा और नए जोश से मिनटों में काम के लिए तैयार हो गया

नाश्ता लेना भी भूल गया होता यदि मां उसे न रोकती -- "बेटा मैं समझ गई हूं कि तुमने अपनी समस्या का हल ढूढ लिया है परन्तु जाने से पूर्व कुछ खा तो लो"

बलदेव ने मां के गले में बाह डाली और रसोई में चला गया, खाते समय उसने अपना विचार बताया मा सिर हिलाती गई जैसे कि वह विकट समस्या को समझ रही हो यद्यपि उसके पल्ले एक अक्षर भी नहीं पड रहा था

"मुझे विश्वास है कि तुमने ठीक मिश्रण को ढूंढ लिया है" -- वह बोली जबकि वह खाकर जाने लगा "अच्छा आर्शीवाद भगवान भली करे"

कारखाने तक पहुंचते-पहुंचते उसकी गति उत्सुकता के कारण तेज हो गई तब तक वहां के कारीगर ही आए थे, परन्तु उसके समस्या के हल सोच लेने पर दो इंजीनियर और आ गए, धातु

विज्ञान शाला में प्रवेश होते ही उन्हें इसके हल ने जोश दिला दिया थोड़ी देर में जब प्रयाग भी रूफल रहा तब तो वे फूले न समाए. बलदेव ने उस धातु मिश्रण का नामकरण, 'मानव जय , कर दिया

"यह तो उत्कृष्ट विचार था", एक इजीनियर ने कहा "वाह ' सरल सी समस्या थी मुझे भी ध्यान नहीं आया"

दूसरे इजीनियर ने मुस्कराते हुए कहा "तो तुम भी तब बच्चों का खिलौना रॉकिट बना लेते"

तभी बलदेव न नए उत्थापक (जेट लिफ्टर्ज) निर्माण का आदेश दे दिया फौरमैन ने वचन दिया कि दिन-रात कारीगरों को लगाकर शीघ्र ही बनाकर उन्हें लगा दिया जाएगा

"उसी शाम का विश्वनाथ ने परिवार का फोन किया उसे यह सुनकर बहुत खुशी हुई कि उधर प्रयोगशाला की रही-सही कमी भी पूरी हो गई उसने यह भी बताया कि अधिकारियों से जो बात हुई है उससे देश को खतरा है

"ससद सदस्यों ने मुझे वरुण प्रदेश में चलने को कहा है इसलिए बेटा तुम्हारे सग उडान भरने की योजना थोडी बदलनी पड़ेगी मै तुम्हें वहीं मिल जाऊगा"

"वहा कहा ?"

"यह कहना कठिन है, तुम स सम्पर्क बनाए रखूंगा"

बलदेव उत्थापकों के लग जाने तक बडी बेताबी स प्रतीक्षा करने लगा भूमिगत छप्पर की ओर वह टहल ही रहा था तभी विद्याधर ने प्रस्ताव रखा कि वह जो धमाके से उनक क्षेत्र में पत्थर गिरा था उसके निशान पढ लने की समस्या को सुलझा लें"

"मैं तुम्हें बताना शायद भूल गया था" -- बलदेव ने कहा कि "उस निशानों के पढने वाली समस्या का भी आंशिक हल मैंने ढूंढ लिया है"

"कैसे ?"

'तुम्हें याद होगा कि उस गिरे हुए टुकड पर दो तिकोने सी बनी हुई है"

"पर उनका भाव तो मेरी समझ में नहीं आया"-- विद्याधर ने बताया 'मेरा विचार है कि उनसे दो समान समस्याओं का पता लगता है एक समस्या है धरती की दूसरी मगलग्रह की"

वह समस्या है क्या" ?

जलवायु मौसम तथा ग्रहों का प्रभाव कुछ भी हो सकता है

"चलो ठीक है बाकी फिर सही" -- विद्याधर मुस्कराया

हा पक्का हल ढूढने मे तो समय लगेगा ही पहले हम यहा तक वरुण प्रदेश की यात्रा से तो निपट लें' -- बलदेव ने कहा

'कब चलने का विचार है ?

यही पर पहले सफल प्रयोग करके देखलें" -- बलदेव का उत्तर था

"अपने पिता जी के स्थान पर किसे ले जाओगे ?"

मॉडल निर्माण विभाग के अध्यक्ष से बातचीत हो चुकी है"

दो दिन बाद अन्तरिक्ष यान दूसरे परीक्षण के लिए तैयार था उस परीक्षण में बलदेव ने जहाज के साथ हर प्रकार के दाव-पेंच करके देख लिए जांच हर तरह से सफल रही

"अब ऊचाई पर इसे देखते है" -- हरीश और विद्याधर को वह बोला

यन्त्रो के दाव का बलदेव देखता गया ऊचाई मापक यन्त्र उडान की ऊंचाई बराबर बता रहा था वे साठ हजार फुट पर उड रहे थे

"मानव ने आजतक इतनी ऊंची उडान नहीं भरी" हरीश चिल्लाया --

"पता है और ऊचे उडते ही हम अन्तरिक्ष में धकेल दिए जाऐंगे" विद्याधर ने सन्देह व्यक्त किया

"चिन्ता नहीं" -- पायलट वलदेव वोला "दवाव वाले यन्त्र ठीक हैं ?"

"ठीक है"

"तव जहाज को यहीं ठहरा कर देखता हूं और इसमें स्थिर रखने वाला यन्त्र लगाकर भी देखता हू" -- वलदेव ने कहा और जहाज को वहीं ठहरा दिया उन लोगों ने इसी वीच खान-पान से निपट लिया आधे घंटे में उसने वताया कि मैं इसे नीचे ले जा रहा हू

"मेरी राय में तो एकदम तेजी से मत उतरो"--हरीश ने कहा "जानते हो हवा की रगड कितनी हानि पहुचा सकती है ?"

"मालूम है" - वलदेव ने स्वीकार किया

वह जहाज को वडे आराम से नीचे ले आया जव वे धरती पर पहुचे नो हृदयनाथ ने स्वत चालित रिकार्ड लगाने चाहे, परन्तु वलदेव के वन्द करने पर कि वरुण प्रदेश के दौरे के वाद लगाए उसने ऐसा न किया अभी प्रचार ठीक नही था

उसी शाम का श्वेत परिवार में शन्ति तथा उसकी सहेली ने एक पार्टी दी इसके तुरन्त वाद हरीश ने वलदेव से कहा --

"श्वेत कारखाने में नया जहाज देखने चल सकते हो ?" मुझे एक सीट वाला जहाज मिला है इसे यदि अपन अन्तरिक्ष यान पर ठहरा सको तो कैसा रहेगा ? मुझे हवाई सेना के भगौड को ढूढना है"

हवाई पट्टी पर पहुचते ही हरीश ने उस छोटे से जहाज की ओर सकेत किया, वह तो जगल में पेडो के वीच कही भी उतर सकता था, वलदेव के लघु जहाज काग जितना ही था परन्तु पास

से लडाई के लिए सुसज्जित था, हर प्रकार की छोटी तोप, रॉकेट इत्यादि इसमें लगे हुए थे

"अरे !" बलदेव चौंका - "यह तो पूरे जहाज स कम नहीं"

"मैं इसे नन्हा लडाकू पुकारूंगा" हरीश ने बात बढाई "केवल प्रयोग के तौर पर तुम्हारे बडे जहाज पर जगह होगी ?"

"पक्का" बलदेव ने विश्वास दिलाया "श्वेत कारखाने के क्षेत्र में इसे अभी ले चलो प्रात इस अन्तरिक्ष यान के भीतर ठहरा दिया जाएगा"

"मैं इसे अभी वहां पहुचाता हू"

हरीश के रवाना होत ही बलदेव ने रात के सतरी अरुण का फोन पर उसके बारे में सूचना दे दी

अरुण ! तुम्हें अपन पुत्र जीत की इन दिनों कोई सूचना मिली है भला ?' बलदेव ने पूछा

"कुछ नहीं उसकी पत्नी बडी परशान है यदि आप वरुण प्रात में जाए तो उसका भी पता निकालने का कष्ट करें"

"जरूर प्रयत्न करूगा" फोन रखते हुए बलदेव बोला

अगली प्रात हरीश का नन्हा लडाकू धकेल कर बडे जहाज पर स्थापित कर दिया गया श्रीमती विश्वनाथ, उसकी बेटी शान्ति तथा श्वेत परिवार के मित्र नूतन भी इन अन्तरिक्ष यात्रियों को शुभकामना देने के लिए उपस्थित थे

"बेटा ! सावधान रहना' मा ने सस्नेह कहा "खतरा मोल लेने की जरूरत नही"

बलदेव विद्याधर हरीश तथा अरविन्द हसते हुए उस भव्य अन्तरिक्ष यान में सवार हुए खुले द्वार पर वे खडे होकर टाटा करने लगे तभी द्वार बन्द हो गया

तुरन्त ही अणु चालित इजन गरजे कुछ ही मिनटों बाद वह

वडा जहाज अपनी प्रथम उडान के लिए आकाश में उड गया

15 विद्रोही दल की प्राण रक्षा

एक घटे के बाद अन्तरिक्ष यान वरुण प्रात की सीमा के पास पहुच गया और थोडी देर बाद सीमा में प्रवश करने लगा

"देखना जरा ' वलदेव" वनों क ऊपर से उडान भरते हुए हरीश वोला ' एक जहाज हमारा पीछा कर रहा है"

वलदेव ने पैंतरा वदला ही था कि उसके आगे से एक लडाकू जहाज एकदम तेजी से निकला

"वह पायलट पागल लगता है" विद्याधर बोला

"कुछ भी हो" -- हरीश वोला "वह तो हम पर टूट रहा है

"वह तो गोलावारी कर रहा है' विद्याधर चिल्लाया जवकि उनके नीचे से गोली गूजती हुई निकली "नियन्त्रित हवा वाले कमरे म यदि छेद हो गया तो हम आकाश में वैस ही तैरते नजर आएगे"

वलदेव और ऊपर उडने लगा जवकि हरीश न दूरवीन संभाली

"यह तो वही भगौडा हो सकता है जिसकी मुझे तलाश है मैं अपने नन्हे लडाकू म इसका पीछा करता हू -- हरीश चिल्लाया और विशेप पोशाक ओढ कर अपने पोत को उडाने चला पीछे-पीछे विधाधर और अरविन्द थे उन लागों ने उसके यान सभालते ही उसे उडाने में उसकी मदद की

शत्रु पायलट उसके पीछे लग गया और उसे ऊंचाई पर उडन को विवश कर दिया परन्तु हरीश ने विजली की तरह चक्कर

काटकर अपने को शत्रु के पीछे लगा लिया उसके बच निकलने के पहल ही उसने टैंक से गोले बरसा दिए

वह मारा हरीश ने" ।। विद्याधर चिल्लाया -- "वह गया शत्रु, अपना छाता खोल रहा है"

तभी हरीश की रेडियो पर ध्वनि हुई "अरविन्द, हरीश बोल रहा हू"

"नही, इस व्यक्ति से तो मै ही सुलझूगा आप लोग अपना काम करो अभी मुझे मदद नहीं चाहिए"

"तो भी हम तो तैयार खडे हैं"

वे सभी लोग इन दोनों की पैतरे बाजी को देखने लगे

"कमाल है" । चन्दन हैरान होकर चिल्लाया -- "नन्हा लडाकू तो जगल में उतर गया है"

उस भगौडे शत्रु के नीचे उतरते ही उसका छाता फस गया हरीश के पहुचते ही उसने झडप तो ली परन्तु हरी", ने उसके जबडा में जोर की चोट देकर उस पर काबू पा लिया पाच मिनट बाद हरीश अपने देश में लगे 'सारण यन्त्र द्वारा जहाज से बोला

"यह व्यक्ति वही भगौडा विद्रोही कमलेश है पूरे काबू में है इसके कागज मेरे पास हैं यह कन्हैया का साथी है उसी ने इसे आज तुम्हे रोकने के लिए भेजा था यह वही यूरेनियम के भण्डार पाने का ही चक्कर है"

तभी अरविन्द बडबडाया "हम भले बचे"

हरीश कहता गया - "कमलेश का लक्ष्य तो हम लोगों पर सहसा टूट पडना था एक और व्यक्ति का भी उसने बताया है उसका नाम है परीश उस पर निगाह रखनी है"

"जरुर ध्यान रहेगा"--बलदेव बाला इस भगौडे का क्या करोगे ?"

"सभ्य ससार में इसे ले जाऊगा"

उधर भगौडा बेकाबू हो रहा था तथा नन्हें लडाकू पोत में भी कुछ गडबड होने जा रही थी

बलदेव को सूचना मिली वह तत्काल अन्तरिक्ष यान को ले उडा अभी जगल में वे उतरने ही लगे थे कि विद्याधर ने शोर मचा दिया

"वे देखो जगली लोग तीर-कमान लिए खडे है"

वे जहाज को देखते ही सहम कर हट गए, जहाज के रुकते ही वे बाहर निकले तभी चन्दन ने एक रस्सा घुमाया

"मैं इस भगौडे मेहमान को ऐसा बाधूगा कि यम भी उसे न खोल सके" -- चन्दन ने आवेश में आकर कहा

वे लोग नन्हें लडाकू को ठीक-ठाक कर ही रहे थे कि वह जगली दल पुन आ धमका वे लोग तीर चलाने जा ही रहे थे कि अरविन्द हंस ने एक दम चिल्लाकर कहा "भागो"

"रुकिए" चन्दन ने कहा और आगे बढकर उन लोगों से कुछ फुसफुसाने लगा तभी उन जगलियों के चेहरे पर मुस्कान चमक आई वास्तव में उसने उन लोगों को अगूठियां, हार तथा दस्ताने इत्यादि सस्ते से उपहार बाट दिए

थोडी देर मे छोटा पोत ठीक हो गया वे उस भगौडे को लेकर उड गए और अन्तरिक्ष यान पर नन्हें लडाकू को ठहरा दिया गया और तब वे उस बडे जहाज में बैठकर उडने लगे तभी हरीश ने कहा "सरकारी सूत्रों के अनुसार हिन्द महासागर में एक व्यापारी जहाज ने प्रवेश किया है उसमें दूसरे विद्रोही परीश के होने की आशका है"

"ठीक है हम लोग उधर चलेंगे वह है कहा ?" वलदेव ने पूछा जब उसे स्थान का पता लग गया तो उसने तुरन्त समुद्र पर उडान भरी, परन्तु वहा कोई भी समुद्री जहाज नजर नहीं पडा अभी वे अटकले ही लगा रहे थे कि वलदेव को एक छोटा सा विन्दु दिखाई पडा विद्याधर ने दूरवीन से देखा

लाग जीवन रक्षा के लिए किश्ती म वैठे है" वह चिल्लाया

"तुम इसका नियन्त्रण सम्भालो तो मैं हेलीकॉप्टर गरुड को लेकर इन लोगों को वचाने की चेष्टा करता हूँ", वलदेव ने विद्याधर से प्रस्ताव रखा

"इससे वढिया और क्या होगा ?" विद्याधर ने स्वीकृति देते हुए कहा

वारह शेष वचे हुए लोगों ने हेलीकॉप्टर को आते देखकर खुशी स नाचना शुरु कर दिया तीन-तीन को एक वार में सीढी द्वारा हेलीकॉप्टर म वह उठाता गया सभी को अन्तरिक्षयान में पहुचाकर प्रसन्न हो गए तथा आभार प्रकट करने वाले विद्राही दल के लोगों का परिचय य लोग लेने लगे परन्तु परीश नाम का कोई नहीं निकला स्पष्ट था कि उनक नकली नाम थे अभी थोडी दूर ही गए थे कि विद्याधर चिल्लाने लगा -- "अरे वह देखा पिछले भाग स कोइ भाग निकला" वलदेव हवाई छाते वाले व्यक्ति को पकडने के लिए पीछे भागा

16 यात्रा जारी रही

वलदेव क पकड पाने स पूर्व हा छाताधारा छलाग लगा चुका था तभी वडा जहाज तेजी स झुका ता वलदेव खुल द्वार स बाहर

गिरने को हुआ वह बडी शक्ति लगाने पर ही कठिनाई से अन्दर पुन जा सका उसे वास्तव में बेहोशी की स्थिति में अरविन्द हस ने खींच कर होश में लाने का यत्न किया -- बलदेव ने अपनी रक्षा के लिए धन्यवाद दिया

"यह भेद खेद खुला कैसे ?" बलदेव से उसने पूछा

"हममें से ही एक यात्री ने" -- बलदेव ने उत्तर दिया "उसने छाते द्वारा छलाग लगा दी"

"सिरफिरा ही होगा जिसन ऐसा खतरा मोल लिया है"

"वह अवसर की तलाश में होगा" -- बलदेव ने कहा "मेरे विचार में वह परीश होगा जिसने अपना नाम बदल रखा था मैं उसके पीछे जाऊंगा"

"हॉ, पर उसे हम पकड भी पाएंगे ?"

बलदव ने विद्याधर को फोन किया और छाताधारी के पीछे चलने के विषय में वात की

"अभी वह नीच तो पहुचा नहीं ?" विद्याधर ने बताया

बलदेव ने अपने दल को सम्बोधित किया -- "तुमम से जहाज से कूदने वाला कौन था ?'

वे लोग चौंक पड़े तभी एक वृद्ध ने कहा -- "वह सेन गोवर्धन था"

"पुलिस उसकी तलाश में है' -- बलदेव बोला "क्या उसके बारे में कुछ बता सकोगे ?"

एक काले बालों वाला व्यक्ति बोल उठा -- "उससे अगले पैत में मैं था हमारी टक्कर होने को थी कि मैंने उसे यह कहते सुना "मैं नहीं मरुंगा वरुण देश को मेरी सेवाओं की जरूरत है"

बलदेव का सन्देह और दृढ हो गया उसने फोन उठाया और विद्याधर से बोला 'हलीकॉप्टर लेकर भगौडे का पीछा करो

अरविन्द हस भी तुम्हारे सग होगा मैं अन्तरिक्षयान का कन्ट्रोल सभाल लूगा"

वलदेव के कन्ट्रोल सम्भालने तक विद्याधर हेलीकॉप्टर को वडे जहाज से उडाकर छाताधारी भगौडे के पीछे भी जा पहुचा, परन्तु हेलीकॉप्टर के धरती को छूते ही छाताधारी भागता हुआ दूर निकल गया

"अरविंद, तुम रुको हेलीकॉप्टर के पास" -- विद्याधर वोला "मैं परीश की खवर लेता हूँ"

वह भगौड के पीछे जगल म घुस गया परन्तु उसका कोई पता न लगा उसने लुक-छिप कर अपने शिकार को देखा वह वरावर भागा जा रहा था तभी भगाडा एक फार्म से पुरानी कार लेकर ऊवड-खावड रास्त से भागकर आंखो से ओझल हो गया

उस फार्म से एक क्षुब्ध वुढिया गालियां देती हुई निकली उसने विद्याधर को अपनी कार के चोर का साथी समझ कर फटकार दी यद्यपि इसने उसे स्थिति से अवगत भी करवाया

"तुम कहा से आए हो" ? वह वाली -- "न तुम्हारे पास अपना घोडा है और न कार ?"

विद्याधर ने शान्त स्वभाव से अपन हेलीकॉप्टर को संभाला और पुलिस को भगोडे की सूचना भिजवा दी

वलदेव ने विद्याधर को अन्तरिक्ष यान का कन्ट्राल सौंपकर यात्रियों से पुन वात-चीत शुरु कर दी और शीघ्र ही वडे जहाज को छोटे भवन के सामन उतारा वहां दर्शकों की भीड ने उसे घेर लिया वे दर्शक वास्तव म संवाददाता थे जो महत्वपूर्ण सूचना एकत्र करने आए थे

"आप म से श्री वल्देव कौन सज्जन हैं ?" एक ने पूछा

"मरा नाम श्री वल्देव है" उसन कहा

तभी उन लागों ने सारी कहानी सुनी तथा डूबते हुए जहाज से बचे-खुचे व्यक्तियो से अलग-अलग प्रश्न पूछ और बलदेव को उसके अन्य जहाज की मुबारिक दी

सवाददाताओं ने बलदेव की इच्छा न होने पर भी उसके अनोखे जहाज के चित्र लिए

"तुम्हारे प्रदेश के जहाज बडे शक्तिशाली हैं" उनमें से एक ने कहा "आप लोग कितने बडे तथा शक्तिशाली जहाज बना सकते हो ?"

बलदेव मुस्कराया, "इतने बडे और शक्तिशाली कि तुम सभी लोगों को मगलग्रह पर पहुँचा दें"

तब वह जहाज के अन्दर चला गया और उस परीश के विषय में पुलिस स निराशाजनक सूचना मिली

वह अपनी यात्रा को जारी रखने को उत्सुक होने पर भी अपने पिता से सम्पर्क स्थापित करना चाहता था अचम्भे का विषय था कि श्री विश्वनाथ ने वचन देने के बावजूद भी अन्तरिक्ष यान की कोई सूचना नही दी थी

वाशव प्रदेश के अध्यक्ष को उसने फोन मिलाया -- "मेरे पिता श्री विश्वनाथ वहा हैं ?'

"इधर आए जरूर थे" -- उत्तर मिला "परन्तु फिर चले गए थे होटल से पता कीजिए"

बलदेव ने होटल में फोन किया वहां भी वह नहीं थे उसे चिन्ता हुई उसने मां को पूछना चाहा परन्तु फोन पर सम्पर्क स्थापित न हो सका उसने विद्याधर से पिता के सम्बन्ध में अपनी चिन्ता व्यक्त की उसका रुख उत्साहवर्धक था

"धैर्य रखो तुम्हें अपने पिताजी के स्वभाव का पता ही है उन्हें वाशव प्रदेश की ओर से आविष्कार करने की धुन सवार हुई

थी अत उसी उपलक्ष में वह वहां गए थे"

बलदेव को यह तर्क तो जचा, परन्तु उसने अपने मित्र विद्याधर से कहा कि बाशव प्रदेश उनके पिताजी के लिए सुरक्षित स्थान नहीं था उसे अपने पिता को वरुण देश के विद्रोहियों द्वारा बन्दी बनाए जाने की आशंका हो गई

"वे लोग जीत के साथ पिताजी को भी पीडा देते होंगे तथा वे अन्य वैज्ञानिकों को भी तंग करते होंगे, हम वहा चलें" -- बलदेव बोला

"यदि ऐसी बात है तो हम लोग वहीं चलते हैं" - विद्याधर ने उससे सहमति प्रकट की

बलदेव ने साथियों को बुलाया और सोच-विचार के बाद तय हुआ कि यदि वे वैज्ञानिक बंदी भी होंगे तो यूरेनियम के भण्डार के पास ही मिलेंगे

उसने नक्शे का अध्ययन किया और तब पर्वतों की ओर उड़ान भरी जहा कि रेडियोधर्मी द्रव्य मौजूद थे शत्रुओं की नजर से बचते हुए चट्टानों से बहुत ऊचें उड़ते गए

इसी बीच में अरविंद ने श्वेत परिवार से सम्पर्क बनाना चाहा और साथ ही कारखाने से भी परन्तु, विफल रहा

"विद्याधर" -- बलदेव ने कुछ देर बाद कहा -- "कन्ट्रोल जरा तुम सम्भालो गति कम कर दो मैं ग्रामस्कोप का परीक्षण कर देखू

विविध कमरों वाली प्रयोगशाला में जाकर अरविंद को साथ लिए हुए बलदेव केन्द्रीय बरामदे में से होता हुआ आधुनिकतम अंधेरे कमरे में पहुंचा वहा एक घनी चित्र सम्बन्धी प्रयोगशाला थी जो छोटे-बड़े कैमरों बड़ा चित्र बनाने वाले कैमरे फोटोस्टेट मशीन और छोटी फिल्म वाल उपकरणों से सुसज्जित थी

वलदेव ने कैमरे के लिए विशेष रूप से तैयार किया हुआ फिल्म का गोलक दराज स निकाला उस फिल्म को उसने धुम्नस्कोप में लगा दिया और अन्तरिक्षयान के निचले कमरे में जाकर उसने शीशों को उस झिरी में लगा दिया जो इसी काम के लिए वनाई गई थी कुछेक मिनटों में वह फिल्म चालू हो गई उसने निकालकर देखा तो वह चौंक पड़ा

"अरविंद, जरा देखो तो इन चित्रों को" -- वलदेव बोला

17 धुए का रहस्य व वम

"वाह ! वाह !" वलदेव चिल्लाया -- "जिन पहाडों पर से हम उडे है उनमें शुद्ध यूरेनियम जरूर होगा"

"क्या अद्‌भुत है" अरविंद की जोश भरी हसी थी

धुम्नस्कोप से फिल्म पर काले भारी धव्वे दीख रहे थे इसके अतिरिक्त ताजी खोज से कच्ची धातुओं की उपस्थिति का सकेत भी मिल रहा था

'नीचे तो जरूर ही ठोस खनिज होंगे" वलदेव हैरान होकर वाला

आगे वैठे विद्याधर से वोला - "नीचे हाकर लौट चलो और मुझ नीचे वाले पर्वतो की लम्वाई-चौडाई वताओ'

"हम कहा उड रहे हैं अरविंद ?"

"वरुण प्रदेश क उत्तर-पूर्वी भाग पर"

"अव हम विद्रोही प्रदश पर से गुजर रहे है" -- वलदेव का उत्तर था "हमारा ठोस काम तो अव शुरु होता है"

आगामी खतरों स तो सभी ववगत थे ही - विद्याधर ने अगले

निर्देशों की प्रतीक्षा में वहा चक्कर काटने शुरु किए बलदेव ने अब आगे पहुँचकर उतरने की सम्भावना पर विचार-विमर्श किया

"नीचे तो सब ऊबड-खाबड है हमें तो उन भण्डारों के ऊपर ही केवल उतरना चाहिए" -- विद्याधर के बर्फ से ढकी पहाडियों पर से चक्कर काटने पर बलदेव बोला

'छोटे टीलों और यूरेनियम के भण्डार के बीच में उतरने के लिए जगह तो है" बलदेव चिल्लाया, 'परन्तु उतरने से पूर्व मैं पिताजी के विषय में पता कर लूँ"

उसने मा को फोन किया - पिता जी की वैज्ञानिकों से भेंट के बाद कुछ नई बातें मालूम पडी होगी हलो - हम तो ठीक हैं पिताजी से कोई नई बात मालूम हुई ? नहीं - कोई बात नहीं अच्छा ' तो मैं उनका पता लगाऊगा इधर सब ठीक है"

उसने फोन बद किया और चिन्तित मन से विद्याधर से बोला- "पिताजी अवश्य ही किसी विपदा में फस गए हैं मैं वाशव प्रदेश के अध्यक्ष से सम्पर्क बनाता हूँ और उसे पिताजी की खोज के लिए पुलिस से सम्पर्क करने को कहता हूँ"

अध्यक्ष से सम्पर्क न कर सकने के कारण उसने स्वयं पुलिस के अध्यक्ष से सीधी बात की हैमक वैज्ञानिक योजना के रहस्य को मन में रखते हुए उसने उन्हे यह सन्देह तो नहीं दिया कि वे लोग उसे फंदे में फसाना चाहते हैं मुखिया ने उसकी चिन्ता को समझते हुए तुरन्त कार्यवाही करने का तथा पुलिस का जहाज भेजने का आश्वासन दिया

"मैं पुलिस के जहाज की बैचेनी से प्रतीक्षा कर रहा हूँ"

"एक घटा और लगेगा" -- मुखिया ने कहा "हमारा नया जुडवां जेट आपके प्रबंध में रहेगा"

"अच्छा, तो अन्तरिक्षयान को नीचे उतार ले चलोगे, बलदेव?" विद्याधर ने पूछा

अभी उन्होंने जगह की अदला-बदली की ही थी कि विद्याधर ने यूरेनियम भण्डार के पास ही एक अनोखी चीज देखी

"वह देखो।" चकित होकर वह चिल्लाया

काले धुएं का घना चक्कर बडी चट्टानों में से ऊपर उठ रहा था पहले तो उन युवकों ने उसे जंगली आग समझा परन्तु वहा तो विरला जगल था और धुआं तो एक सुनियोजित ढग से उठ रहा था और बद हो रहा था

"इसमें रहस्य है।" विद्याधर बोला

धुआं सचमुच ही एक क्रम से उठ - बद हो रहा था

"क्या ये संकेत सहायता के लिए हैं अथवा खोए हुए वैज्ञानिक हैं जिनकी हमें तलाश है अथवा कोई फदा है ?" बलदेव बोला

"यदि ऐसा है - तो हमें पुलिस के आने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए, शायद तुम्हारा मित्र कन्हैया तुम लोगों को मिलने के लिए ही कहीं उतावला न हो रहा हो"

वे घंटे तक उसी क्षेत्र पर मडराते रहे धुआ तो नजर नही पडा, न ही पुलिस का कोई जहाज

बलदेव चौकसी से अन्तरिक्ष यान को सभाले हुए था उधर मौसम भी एकदम बदल गया और थोडी देरी भी घातक सिद्ध हो सकती थी उनका दम घुटा-सा जा रहा था अरविंद भी उनके साथ मिल गया था और गौर से इधर-उधर देख रहा था

"उन पुलिस वालों के साथ अप्रिय घटना तो नहीं हो गई।" अरविंद ने कहा-- "मुझे तो ऐसा लगता है कि वरुण देश के विद्रोहियों ने तुम्हारी पुलिस की सूचना को बीच में ही काट दिया है"

"यह भी सम्भव है" -- वलदेव ने कहा "चलो उनकी तलाश करें

उन्हाने वाशव प्रदेश पर जहाज की उडान भरी परन्तु निष्फल "अव तो उसी पहले टूटे हुए स्थान पर ही उतरते हैं" वलदेव ने निर्णय किया

"ठीक है" सभी न स्वीकृति दी

वलदेव के उधर उतरन से पूर्व ही सफेद धुआ उडता हुआ दियाई पडा - उतनी ही देर म उसे एक भयानक वस्तु अपने सिरों के ऊपर नजर आई

"मैंन ता आजतक एसा चीज कभी देखी नहीं" -- विद्याधर चिल्लाया

यह ता काइ दैत्य हमारे ऊपर चढा आ रहा है" -- वलदेव ने दूरवीन से देखते हुए कहा - "मिकनातीसी प्रक्षेपण अस्त्र मालूम पडता है यह तो हमें छूते ही हमार टुकडे-टुकडे कर देगा"

वलदेव ने अपने जहाज को टकराने से वाल-वाल वचा लिया

क्या यह मिकनातीसी बम था जो कि विद्रोही शत्रुओं द्वारा बनाया गया था, जिसका कि हमारी प्रयोगशाला निशाना वनने जा रही थी ?"

वलदेव ने एकदम गोला मारा

विद्याधर ने अपने को सम्भाला- "वलदेव क्या कर रह हो ? टक्कर मारोगे ?"

वलदेव के पास अपनी चाल वताने का समय कहां था ? उसका वड़ा जहाज पूर्व की ओर उडा एक ऊची घाटी स टकराने के लिए

"अब गए", विद्याधर ने सन्देह व्यक्त किया

बलदेव की तो चाल थी न चोटी को छूता हुआ जहाज आख झपकते ही आकाश की ओर ऐसा उडा कि सब यात्रियों की सास ऊपर की ऊपर ही रह गई

उसी क्षण जहाज के नीचे चोटी पर बम फटते ही धमाका हुआ

"वाह ! मान गए" विद्याधर ने नेत्र फाडते हुए कहा-- "तुमने बहुत बारीकी से इसे काटा है' तब उसने पायलट को धमकी दी --"मैं तो समझा था कि तुम्हारा दिमाग फिर गया है'--वह बोला "तुम सचमुच ही इतने बडे ढाचे को खूब सम्भाल सकते हो

यह क्षण भर का काम मुझे घटों का सा लगा" -- बलदेव ने भौए पोंछते हुए कहा

अरे भाई हमारा पल्ला भी अनाडियों से नहीं पडा" -- अरविंद ने कहा -- "वे लोग भी मजे हुए वैज्ञानिक हैं"

"बिल्कुल" -- बलदेव ने स्वीकार किया -- "अब हमें हेमशपाक मुख्यालय की ओर लौट जाना चाहिए ? -- "अरविंद ने कहा"

"नहीं" -- बलदेव बोला -- "हमें शाम तक इधर-ही रहना है ताकि धुएं के सकेतों का पता लगा सकें, पर अभी तो मैं लौट जाने का बहाना करता हू ताकि शत्रु को हमारे यहा होने की आशका न रहे"

उसने जहाज को घुमाया और वापिस लौटने के बहाने नीचे ले जाते हुए पहले दूटी हुई छोटी घाटी में उसे उतार दिया

"बहुत चतुराई से ले आए हो" -- अरविंद बोला -- "शत्रु

शका नहीं कर सकता"

तभी बलदेव ने जहाज को ठीक से ठहरा दिया उस निर्जन में पहुंचने वाले शायद वे पहल लोग थे

इतने में वह अन्दर से एक भारी गठरी उठा लाया

"जहाज के लिए चितकबरा तिरपाल होगा" -- अरविंद ने आश्चर्य व्यक्त किया

"तुम्हारा अनुमान सही है" -- वह बोला -- "ऊपर से तिरपाल धरती ही नजर आएगी ठीक रहा न ?"

"मैंने इतना बड़ा तो ह्वेल मछली पकड़ने का जाल भी नहीं देखा होगा" -- चन्दन ने रसोइए से चकित होकर कहा

"मछलियां ही हो तो हम तुम्हारे लिए उधार दे सकते हैं" - बलदेव ने मजाक किया

तब सभी ने पसीने में लथपथ होकर जहाज को जाल से ढँक दिया

"अब तो रेडार से भले ही शत्रु देख पाए अथवा हमें उतरते शत्रु ने देख लिया हो तो दूसरी बात है नहीं तो इसे कौन ढूंढ सकता है ?" बलदेव ने कहा

"अब यूरेनियम ढूढने का काम ?" -- चन्दन बोला

"स्थिति संभाल ले -- बलदेव बोला-- "शाम होने को है"

जहाज को ताला लगाकर वे लोग घाटी की खोज पर चल पड़े बलदेव ने अपना गीगर काउंटर ले लिया यन्त्र काम करने लगा रेडियोधर्मी खनिज को तो यन्त्र बताने लग गया

"देखा ! हम सफल हो रहे हैं न ?" जोश से अरविंद उछला

"पर शत्रु को तो इस तथ्य का पता न लग पाए" -- "इसी चक्कर में तो वे लोग भी योजनाएं बनाते फिरते हैं"

"विद्रोही कमलीश ने भी तो इस स्वीकार किया था" -

अरविंद ने पुष्टि की

अपनी सफल खोज से लौटकर उन्होने चन्दन द्वारा तैयार किया हुआ स्वादिष्ट भोजन किया और बातचात करने लगे

"सुनो ! सुनो", बलदेव सहसा बोल उठा -- "शायद पुलिस का जहाज है" -- रेडार से उसने पता लगाते हुए कहा

वे सभी जहाज के तिरपाल पर चढ़कर देखने लगे ठीक उनके सिर पर जहाज लाल तथा हरी रोशनी फेक रहा था तभी बलदेव ने हेलीकॉप्टर मे शत्रु का पता लगाने की सोची और शीघ्र ही वह उड गया शत्रु तो ओझल हो गया पर इसका जहाज भगोडे जहाज के पीछे भागता गया इसका छोटा हेलीकॉप्टर जब दो घाटियो मे से उडा तो ऐसे प्रतीत हुआ कि वह किसी भारी भरकम मशीन की ओर खिचा जा रहा हो

19 वापिस बडे जहाज मे

"हम तो तूफान मे फस गए है" - बलदेव चिल्ला उठा जब कि हेलीकॉप्टर जोर से इधर-उधर डोलने लगा

बलदेव शान्त पोत को सभाले रहा आधी का वेग कम होते ही उसने पोत को खुले आकाश की ओर बर्फीले पहाडो से ऊपर उठते पाया

तभी वह हेलीकॉप्टर एक चोटी के पास से गोली की तरह निकला

"बस अब गए" विद्याधर ने आखे बद कर ली

बलदेव ने यान को बचाने के लिए अपना पूरा बल जुटा दिया वह चोटी से सौ फुट एक नए तूफान के झोके से फंसकर चोटी को

लगभग छूता हुआ साफ निकल गया

'आज तो इतना ही काफी है" -- धड़कते हुए दिल से विद्याधर बोला -- तुम्हें तो शुद्ध युरेनियम का तमगा इनाम में मिलना चाहिए बस अब घर को लौट चलें"

वापसी संघर्षपूर्ण नहीं थी चादनी रात में अपनी साहसपूर्ण यात्रा का ब्यौरा उन्होंने चन्दन तथा अरविंद को दिया तभी सब लोग अन्तरिक्ष यान में पहुचे

बलदेव तो रात को भी वाशव के क्षेत्र में गिरने वाले उल्कापात के सकेतों की समस्या का सुलझाने में लगा था

"शायद मगलग्रह के लोग इस धरती की खोज में लगे हैं" -- उसने सोचा और थोडा देर म ही सो गया

प्रात उठते ही उसने अपने पिता के विषय में पूछने के लिए तथा पुलिस के जहाज की यात्रा का पता लगाने के लिए फोन मिलाया परन्तु कोई भी उत्तर न मिला

"देखो ! तभी विद्याधर चिल्ला उठा -- बारह फुट पंख वाला पक्षी हम पर टूटने जा रहा है

थोडी देर मे वह भयानक पक्षी एक जिराफ पर झपटा और उसे फाड जाता यदि विद्याधर न गोली के धमाके से उसे भगा दिया न होता

तभी वे लोग उधर को उड जहा कि पहले धुआ दिखाई दिया

ये तो सकेत हैं पर धुआ कहा से निकल रहा है ? -- विद्याधर ने पूछा

अभी नीचे उतर कर कारण ढूढते हैं" -- बलदव ने कहा नहीं तो पुलिस के आने पर ही हम भी पता लगाए रात का समय ठीक है"

"रात का तो केवल जानवर ही देख पाते हैं

"हम लोग क्या जानवरों से कम है ?" बलदेव ने हसी की --
"लो" अन्दर से सफेद पंट का डिब्बा लाकर धरती पर उसे छिडक देंगे और रात को भी इस जगह को हम देख सकेंगे

"यह बात भी ठीक है रात को शत्रु को भी पता नहीं लग पाएगा" -- विद्याधर ने पुष्टि की

"बस तो रात को ही खोए हुए वैज्ञानिकों को निकाल लेंगे और शायद पिता जी भी यहीं मिल जाए" -- बलदेव ने बात को पक्का किया

20 फदे में फदा

बलदेव ने हेलीकॉप्टर सभाला और विद्याधर ने सफेद पेंट बिखेर दी तथा उस जगह की ओर चल पडे जहां चन्दन तथा अरविंद धातु के खोदने में लगे थे

तभी चन्दन को प्यास लगी थोडी दूर बह रहे जल को उसने पिया

"अरे जल अधिक पी लिया तो स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पडेगा और बाल भी झड जाएगे -- अरविंद ने टोका

रसोइए का हाथ एक दम सिर के बालों पर गया

"शुक्र है बाल अभी सही सलामत है वह हसा

तभी उनका हेलीकॉप्टर भी उतरा और उन्होंने अपनी उडान का वृतात सुनाया

"हमने धुए द्वारा नीचे से मिलने वाले सकेतों के भेजने वालों का पता करने क लिए पुन रात को जाना है"

दूसरे दोनों ने भोजन के बाद खुदाई फिर शुरु कर दी चन्दन

तथा अरविंद अभी खोद ही रहे थे कि भूचाल का जोर का झटका आया और दूसरे ही क्षण जहा वे काम कर रहे थे पत्थरों की चट्टान-सी खड़ी हो गई

क्या वे दोनों दब गए होंगे ? "विद्याधर ने पूछा

बलदेव ने अन्तरिक्षयान की उडान उसी स्थान पर भरी, पर दोनों का नामोनिशान नहीं था

"घबराओ नही -- बलदेव को सान्तवना देते हुए विद्याधर ने कहा--"वे तो भूकम्प के समय चट्टान की आट म जा छिपे होगे"

चलो तो अभी उसी स्थान पर उतर कर पता लगाते हैं" -- बलदेव ने प्रस्ताव रखा

अभी व उतरने ही जा रहे थे कि उनकी नजर उस स्थान विशेष पर पडी जहा कुछ देर पहले वे लोग काम कर रहे थे तभी बलदेव ने दो व्यक्तियों को दौडते हुए देखा परन्तु वे तुरन्त ही नजर स ओझल हो गये

अभी बलदेव तथा विद्याधर दुविधा में ही पडे थे कि एक हथियार बद व्यक्तियों के दल ने एकदम टीले के पीछे से आकर उन्ह घेर लिया उसी समय उन्हें अपने ऊपर जहाज की ध्वनि सुनाई दी

अरे ! वह गया हमारा अन्तरिक्ष यान भी" बलदेव देखता ही रह गया घबराहट के कारण उनके पाव के नीचे से धरती भी निकल गई मालूम हो रही थी

"अब तो लुटिया डूब गई समझो" -- वैज्ञानिक बलदेव ने अधीरता से कहा -- "पिताजी की चन्दन तथा अरविंद की भी कोई खैर खबर नहीं हम दोनों शत्रु की कैद में घिर गए हैं"

शत्रुओं के दल ने उन्हें रस्सों स जकड दिया था और घोडा

पर उन्हें भगा कर ले जाने की योजना बनाने लगे तभी ऊपर से फिर जहाज की गूज सुनाई दी

"शत्रु हवाई आक्रमण करना चाहता है" -- बलदेव बोला

"रुको" ।। ऊपर से आवाज सुनाई दी

मुड़ते ही उन्होंने अरविंद व चन्दन को धरती पर छलाग लगाते देखा

"चन्दन ।" - बलदेव चिल्ला उठा

उसके पीछे अरविंद भी उतरा दोनों ने उनके फंदे को काटा शत्रुओं के दल ने जहाज की ध्वनि सुनते ही अपने घोड़ों को एडी लगाई और भागते नजर भी नहीं आए

"आप जिन्दा हैं भगवान का शुक्र है" -- बलदेव चिल्लाया - "परन्तु यह सब कुछ कैसे हुआ ? भूचाल से कैसे बचे ?

"बचाने वाला मारने वाले से अधिक शक्तिशाली है - चन्दन ने उत्तर दिया -- "सारी कथा बाद में, अभी यहा से निकल चलो"

अन्तरिक्षयान में उड़ते ही एक-दूसरे ने अपनी-अपनी राम कहानी कह सुनाई

"मैंने तो समझा था कि जहाज मेरी पीठ पर उतरने जा रहा है" -- चन्दन ने कहा

"तुम्हारी पीठ है कि हवाई अड्डा । ' विद्याधर ने चुटकी ली "अच्छा अब इन घाटियों में धातुओं की खोजबीन तो कर लें

थोड़ी देर तो उडान भरने के बाद उन्होंने उसे सुरक्षित स्थान पर उतारा

"मैं तो पिता जी को तथा जीत को ढूढने जाऊगा वह बोला

थोड़ी देर में बलदेव दो पायलटों के साथ हेलीकॉप्टर को अन्तरिक्ष में से उड़ा कर अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए चल पड़ा

वे उसी दिशा में उडे जहा से धुए के सकेत मिले थे

रात का समय था वे उसी घाटी के ऊपर मडराने लगे जहा रगीन पंट फैलाई थी वे लोग वडी सावधानी से वहा उतरे हेलीकॉप्टर को ठहराकर वे दवे पाव वढते गए

अरे ! यह लोहे का द्वार !" विद्याधर फुसफुसाया

"चट्टान के सहारे एक सतरी भी ऊघ रहा है" -- वलदेव ने धीरे से कहा

आगे वढकर उन्होंने सतरी को गहरा नींद में सोए पाया वलदेव ने अपने पिता की घडा उसकी कलाई पर वधी हुई पहचान ली

"इसका मुँह बन्द कर दो वोलने न पाए" वलदेव ने विद्याधर को निर्देश दिया -- "और मैं इसकी वाहें जकडता हूँ"

दूसरे ही क्षण उस सन्तरी ने अपने को वधा पाया उस सन्तरी की जेब से चाविया निकाल कर उन्होंने चट्टान में बने कमरे का द्वार खोला

"मैं अन्दर जाता हू" -- वलदेव ने कहा - "तुम इधर ठहरो और जरुरत के समय सीटी बजा देना",

वह आगे वढता गया आगे और छोटी कोठरी में ताला लगा पाया उसे भी खोला गया

"कौन" अन्दर से आवाज आई

"एक भारतीय"

"भीतर आ जाओ",

वलदेव ने टार्च मारी

"जीत ! यह कैसे" वलदेव ने पूछा

जीत के साथ अन्य वैज्ञानिक भी कैदी बने वैठे थे भूखों मरने के कारण उन लोगों में बोलने की हिम्मत तो थी नहीं वलदेव ने

जेब से उन्हें छोटी-मोटी खाद्य-सामग्री दी

"उसने उन्हें बताया कि धुए के सकेतों को पाकर विद्याधर तथा वह वहां पहुचे हैं

"तुम्हे पकड़ने वाले कौन हैं ?

"एक है कन्हैया, दूसरा है परीश" -- जीत ने कहा - "इन्ही लोगों का साथी हेमक वैज्ञानिक समाज मे भी जासूस का काम करता है, इसी ने पुलिस के काम में रोडा डाला था हमारे दल को हानि पहुचाने की चेष्टा की तथा अन्तरिक्षयान को नष्ट करने का प्रयास किया यह हो कौन सकता है" ?

इतना कहने के उपरान्त बलदेव ने फिर प्रश्न किया -- "यह विद्रोही दल तुम लोगों द्वारा अपना कौन सा लक्ष्य सिद्ध करना चाहता था ?

"वे वैज्ञानिक हमारे सहयोग से यूरेनियम के साथ कुछ परीक्षण करने जा रहे थे, पर इससे पूर्व वे तुम लोगा का काटा निकाल देना चाहते है तुम लोग अप्रत्याशित हो उनके रास्ते मे आ गए हो", "हमारे साथ हेलीकाप्टर तक तो चल सकोगे" -- बलदेव ने पूछा "क्यों नहीं ?" जीत ने स्वीकृति दी

बलदेव ने टार्च जलाई और वे सब चल पडे द्वार तक पहुचते-पहुचते उन्हें एक तेज सीटी की आवाज सुनाई पडी

बलदेव को शका हो रही थी वही बात हुई बाहर के द्वार पर जजीर लगी हुई थी जिसकी चाबी भी उनके पास चाबियों के गुच्छे में नहीं थी

बाहर आग की धीमी रोशनी में न तो जकडे हुए द्वारपाल का कोई निशान था और न ही विद्याधर मौजूद था

21 लक्ष्य की प्राप्ति

अरविंद तथा विद्याधर दोनों ही परेशान हो गए, बलदेव का कोई कुशल-क्षेम नहीं

अभी वे बातें ही कर रहे थे कि पीछे मे खटका हुआ "अरे यह कौन है?" एक भयानक व्यक्ति को देखते ही चन्दन चौंका उसके पीछे एक पूरा दल था "आप लोग कौन हैं यहा क्या करने आए हैं ?"

"जो भी हम हों पर तुम हमारे कैदी हो और तुम्हारे बाकी साथी तुम लोगों को यूरेनियम के भण्डार पर अधिकार नहीं होने देंगे यदि तुम हमारे साथ मिल जाओ तो उस भण्डार मे तुम्हारा भी हिस्सा होगा

"हमें स्वीकार है", अरविन्द ने सिर हिलाया

अभी वे दोनों तय कर ही रहे थे कि ऊपर से ध्वनि सुनाई पड़ी उनके देखते ही देखते हेलीकॉप्टर नीचे उतरा

विश्वनाथ पुलिस अधिकारियों के साथ ही था --"आप सब इकट्ठे कैसे ?"

चन्दन उछल पडा

उनके उतरते ही शत्रु को उन्होंने बन्दी बना लिया पुलिस की सूचना के अनुसार वरुण प्रान्त के सभी विद्रोही पकड़े जा चुके थे

श्वेत परिवार के वैज्ञानिक तथा उनके सभी सहयोगी पुन मिल गए. यूरेनियम के भण्डार पाने में भी वे सफल हो चुके थे विद्रोही तथा जासूस सभी पुलिस हिरासत में थ

"अब यूरेनियम के कीमती भण्डार को पाने के बाद आगे क्या कार्यक्रम है पिता जी ?" -- बलदेव ने पूछा

"बेटा तुम्हारे अन्तरिक्षयान से श्वेत परिवार का तथा देश का भविष्य उज्ज्वल है" विश्वनाथ बोला

"तो अगला कदम हमारा मगलग्रह की साहसपूर्ण यात्रा ही होना चाहिए" -- बलदेव ने आशापूर्ण सुझाव दिया

**